छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-भाद्रपद-आश्विन, संवत् 2071
सितम्बर 2014

ओ३म्

अंक 110, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

दण्डी स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती

केरल में हुआ वैदिक क्रांति का उदय

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के अन्तर्गत राष्ट्र समृद्धि यज्ञ एवं महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र का शिलान्यास सम्पन्न

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक प्रत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७१
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११५
दयानन्दाब्द .- १९१

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रवधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क -१००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - १०, अंक ३ | ओ३म् | मास/सन् - सितम्बर - २०१४

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सभ्रसभ्रकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : तेरी शरण	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : आखिर कैसे सुधरेगा – हमारा शैक्षणिक स्तर	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	हिन्दी के विकास में आर्यसमाज का योगदान	डॉ. गौरीशंकर वैश्य	०८
४.	शिक्षक बनाम शिक्षक दिवस	आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री	१०
५.	वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द	श्री खुशहालचन्द्र आर्य	१२
६.	हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी कब बन सकेंगे ?	श्री कन्हैयालाल जी आर्य	१४
७.	धर्मार्य सभा और विद्वानों की भूमिका	आचार्य डॉ. अजय आर्य	१६
८.	प्रश्नोत्तरी माला–विदुर नीति	पं. वासुदेव व्रती	२०
९.	हमारे आदर्श – गुरु विरजानन्द सरस्वती	डॉ. अशोक आर्य	२२
१०.	पूर्ण विकसित द्वीप सिंगापुर से आचार्य आनन्द पुरुषार्थी की चिट्ठी	आचार्य आनन्द पुरुषार्थी	२४
१४.	होमियोपैथी से वायरल का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२६
१५.	समाचार दर्पण		२७

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

तेरी शरण

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

उपच्छायामिव घृणे, अगन्म शर्म ते वयम्।
अग्ने हिरण्यसन्दृशः॥ ऋग्. ६.१६.३८

ऋषिः बार्हस्पत्यः भरद्वाजः। देवता अग्निः। छन्दः गायत्री।

● **(अग्ने)** हे अग्रणी परमात्मन्! **(छायाम् इव)** जैसे कोई छाया में (पहुँचता है) वैसे ही **(ते)** तुझ **(हिरण्यसन्दृशः)** हिरण्यसदृशः और **(घृणेः)** ज्योतिर्मय की **(शर्म)** शरण में **(वयं)** हम **(उप अगन्म)** पहुंच गये हैं।

● जब मनुष्य धूप में व्याकुल हो रहा होता है, शरीर से पसीने की धारें चू रही होती हैं, ताप से सिर फटा जाता है, तब वह किसी तरु की शीतल छाया में पहुंचना चाहता है। छाया पाकर उसे जो विश्राम मिलता है, उससे वह अपना सब दुःख भूल जाता है। ऐसी ही अवस्था आज हमारी हो रही है। हम सांसारिक तापों से ऐसे संतप्त, क्लान्त और उद्विग्न हो रहे हैं कि छाया पाये बिना चैन नहीं पड़ रहा है। पर जायें तो किस छाया में जायें? घने-से-घने वृक्ष या बड़े-से-बड़े भवन आदि की छाया इस सांसारिक ताप को नहीं मिटा सकती। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश आदि के क्लेशों से संतप्त जन को कोई भौतिक छाया कैसे शान्ति दे सकती है? हे जगत्पति! हे ईशों के ईश! तुम्हारी ही छाया हमारे सन्तापों को हर सकती है। अतः हम तुम्हारी शरण में आ रहे हैं। पर तुम तो अग्नि हो, अग्नि से तो ज्वालाएं निकलती हैं। हम संतप्तों को यदि तुम्हारी ज्वालाओं ने घेर लिया है, तो क्या और भी अधिक हम आग में नहीं झुलसने लग जायेंगे? नहीं, यद्यपि तुम अग्नि हो, घृणि हो, जाज्वल्यमान हो, तो भी शरणागतों को जलाते नहीं, अपितु उनके ताप को ही भस्म करते हो। तुम हिरण्यसन्दृश हो, सुवर्ण-सदृश, तेज-वाले हो। हिरण्य यद्यपि आग्नेय है, पर उसका तेज धारणकर्ता को दग्ध नहीं करता, प्रत्युत मनमोहक और शरीर को शान्ति देने वाला होता है। इसी प्रकार तुम अग्निमय, देदीप्यमान एवं हिरण्यसंदृश की छत्रछाया और शरण सन्तापों से हमारा उद्धार ही करता है। यदि भूल से हम किसी सीलन-भरी एवं मलिन आसुरी छाया में पहुंच गये, तो सन्ताप तो हमारे क्या ही मिटेंगे, उल्टे हमें किन्हीं नवीन आधि-व्याधियों से ग्रस्त हो जाने का भय है। हे शरणागतो के त्राता! हम अपनी ओर से तुम्हारी शरण में ही रहे हैं, तुम भी हमें अपनी शरण में ले लो और हमारे सब सन्तापों को हरकर हमें दिव्य आनन्द प्रदान कर दो।

संस्कृतार्थ :- १. घृणिः प्रज्वलित (निघं ३.११), २. शर्म शरणम् (निरु. ९.१९)

सम्पादकीय

आखिर कैसे सुधरेगा - हमारा शैक्षणिक स्तर

एक समय था जब भारतीय यह उद्घोष करते थे -

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

जिसका भाव है कि समस्त पृथ्वी के मानव इस देश में जन्मे लोगों से अपने-अपने चरित्र की शिक्षा लें। इसीलिए भारत जगद्गुरु कहलाता था। परन्तु आज स्थिति यह है कि भारत के लोग शिक्षा के लिए विदेशियों का मुंह ताक रहे हैं। दिनोदिन शिक्षा स्तर गिरता जा रहा है। लोग दीन-हीन बनते जा रहे हैं। भारत की इस दुर्दशा की चिन्ता बहुत कम लोगों को है। अधिकांश लोग बेखबर है और जिन्हें खबर है उनमें से अधिकांश के पास बस चिन्ता ही चिन्ता है, कुछ करने की ललक नहीं है। वे अपना दायित्व ही नहीं समझते। जिनके पास दायित्व है उनमें से अधिकांश उदासीन और शेष साधनहीन है।

शिक्षा का प्रारंभ घर से होता है। बच्चों के प्रथम शिक्षक है माता-पिता। घर को प्रथम पाठशाला की संज्ञा दी गई है, परन्तु आज स्थिति यह है कि अधिकांश माता-पिता के पास समय ही नहीं है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान दे सकें। वे नहीं देख पाते कि बच्चा नियमित स्कूल जा रहा है या नहीं। स्कूल का काम घर पर कर रहा है या नहीं। उसकी प्रगति कैसी है। किस विषय में कमजोर है। उन्होंने खाने-पीने, किताब-कापी, पहनने-ओढ़ने और फीस आदि की व्यवस्था कर दी, स्कूल में नाम लिखा दिया, अब बच्चा जाने और जाने अध्यापक, उन्हें कोई मतलब नहीं। यदि माता-पिता बच्चों को भी समय देने का नियम बनायें तो शिक्षा का स्तर उठ सकता है। शिक्षित अभिभावक बच्चों की काफी कठिनाईयां दूर कर सकते हैं और जो शिक्षित नहीं है वे उनकी निगरानी कर सकते हैं कि वे पढ़-लिख रहे हैं या नहीं। अभिभावक देखें कि वे घर पर कितने समय पढ़ते हैं, कितने समय खेलते हैं और कितने समय सोते हैं। उन्हें पास-पड़ोस के पढ़े-लिखे लोगों के उदाहरणों से बच्चों को पढ़-लिखकर आगे बढ़ने को प्रेरित करना चाहिए।

क्या गांव, क्या शहर, आज कहीं भी शैक्षिक वातावरण नहीं है। शिक्षा बस, स्कूल तक ही सीमित है। स्कूल के बाहर की दुनिया ही कुछ और है। बच्चे स्कूल के बाहर जाने के बाद पढ़ना-लिखना भूल जाते हैं। क्योंकि बाहर लोग अपने-अपने धन्धे में लगे हैं। यहां तक कि स्कूल से लौटने के बाद बच्चों को भी उन्हीं धन्धों में लग जाना पड़ता है और उन धन्धों से फुर्सत उन्हें खाने, सोने और स्कूल जाने के समय ही मिलती है। यदि बच्चों में पढ़ने की उत्कण्ठा पैदा की जाये, उनके लिए पढ़ने-पढ़ाने का वातावरण बनाया जाये तो शैक्षणिक उन्नति हो सकती है।

शिक्षा का स्तर गिरने का एक प्रमुख कारण भ्रष्टाचार भी है। आज चारों ओर भाई-भतीजावाद और घूसखोरी का बोलबाला है। प्रतिभा और योग्यतायें सब एक ओर धरी रह जाती है। अयोग्य आदमी धन और सोर्स की बदौलत स्थान पा जाता है, आगे बढ़ जाता है। आज बस डिग्री महत्वपूर्ण हो गई है, योग्यता नहीं। इसलिए लोग येन केन प्रकारेण बस, डिग्री प्राप्त कर लेना चाहते हैं और येन केन प्रकारेण डिग्री प्राप्त कर लेने वाला शिक्षा के महत्व को कभी समझ नहीं सकता। यदि भ्रष्टाचारियों के लिए कठोर दण्ड का विधान हो, उनके हौसले पस्त हों तथा डिग्री एक ओर रखकर प्रतिभा और योग्यता को महत्व दिया जाये तो शिक्षा का स्तर अवश्य उठ सकता है। भारत में शिक्षा का स्तर गिरने में सरकारी नीतियों का भी महत्वपूर्ण हाथ है। आज तक देश में वही शिक्षा-पद्धति चल रही है जो अंग्रेजों ने मात्र अपनी सरकार के लिए क्लर्क पैदा करने के लिए

चलाई थी। भारत में अनेक प्रकार के विद्यालय हैं। सबका पाठ्यक्रम भिन्न और वेतनमान भिन्न। इन्हीं भिन्नताओं में एक और कड़ी नवोदय विद्यालयों के रूप में जोड़ी गई है। ये भिन्नतायें भी शिक्षा का स्तर गिरने का एक महान कारण है। शैक्षणिक स्तर के गिरने का एक अन्य कारण शिक्षकों का वेतन भी है। शिक्षकों का वेतन इस देश में अन्य कर्मचारियों की अपेक्षा न्यून है। जिससे वह बुझा-बुझा सा रहता है और जीवन की दौड़ में पीछे रहता है। जिस देश का शिक्षक जीवन की दौड़ में पीछे हों, वहाँ शिक्षा की उन्नति कैसे हो सकती है। यदि सरकारी नीति बदले, शिक्षा का राष्ट्रीयकरण हो, शिक्षकों को अच्छा वेतन मिले, हर क्षेत्र में शिक्षकों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाये तो शिक्षा का स्तर ऊँचा उठ सकता है।

चाहे घर हो या स्कूल, शिक्षा सम्बन्धी सामग्री का सर्वत्र अभाव है। सर्वप्रथम हम स्कूल को ही लें, जिनसे हम शिक्षोन्नयन की आशा करते हैं। कतिपय स्कूल ही होंगे जहां पुस्तकालय एवं वाचनालय हैं और उनमें से कुछेक में ही पर्याप्त उत्कृष्ट साहित्य एंव पत्र-पत्रिकायें आती होंगी। आज इंटरनेट का युग है। वह भी हर विद्यालय में नहीं है। यही स्थिति अन्य सहायक सामग्रियों की भी है, वे चाहे वैज्ञानिक हों या तकनीकी। बस, विभाग खुल गये हैं, सामग्री नहीं है। यदि सहायक सामग्री उपलब्ध हो तो शिक्षा का स्तरोन्नयन हो सकता है। आज सब की यही धारणा बन् गयी है कि **सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति**। अर्थात् सब कुछ धन से ही सम्भव है। अतएव सब का ध्यान जैसे-जैसे धन कमाने पर ही केन्द्रित है। घर में माता-पिता या जिस किसी की भी बात सुनिये- मुख्य चर्चा का विषय धन ही होगा। सब इसी उपाय की चिन्ता में हैं कि कैसे घर सोने-चांदी से भर जाये। सब लोग अपने बच्चों को पढ़ाना भी बस इसीलिये चाहते हैं कि पढ़-लिख कर अच्छी नौकरी पा जायेगा, खूब धन कमायेगा और हमारा दारिद्र्य दूर हो जायेगा। अतएव सभी यह चाहते हैं कि हमारे बच्चे जैसे-तैसे अच्छे अंकों में परीक्षा पास कर लें। यही कारण है कि अनुदिन शिक्षा का स्तर गिरता ही जा रहा है। यदि सभी का दृष्टिकोण बदले, चिन्तन इस प्रकार का हो कि न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः आदमी धन से तृप्त नहीं हो सकता, इसीलिए -

साई इतना दीजिये या में कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा ना रहूं साधु भूखा न जाए॥

तो स्थिति काफी सुधर सकती है। इससे मात्र शिक्षा का ही स्तर नहीं उठेगा वरन् आम आदमी का जीवन स्तर भी ऊँचा उठने लगेगा और देश में सुख-समृद्धि एवं शांति स्वतः आने लग जायेगी। अन्य व्यवसायों की भांति धनिकों ने आज शिक्षा को भी धर्नाजन का साधन बना लिया है। अधिक से अधिक शिक्षण संस्थायें खोल कर उनसे धन कमाना ही उनका एकमात्र उद्देश्य रह गया है। परिणामस्वरूप अयोग्य व्यक्ति धन की बदौलत शिक्षक बन जाते हैं और बन रहे हैं। कितने तो शिक्षक भी बस नौकरी पाने के उद्देश्य से बने हैं। अन्तःप्रेरणा से प्रेरित होकर शायद ही कोई इस क्षेत्र में आया हो। किसी और नौकरी लायक न रहे तो शिक्षक ही बन गये। इसलिए ऐसों की रुचि शिक्षा का स्तर उठाने में नहीं है। वे बस अपनी हाजिरी बजा रहे हैं। अन्य कर्मचारियों की तरह वे भी अपने को कर्मचारी ही समझते हैं, अध्यापक नहीं।

यदि विधिवत् परीक्षा देकर योग्य, देश तथा समाज के प्रति समर्पित, निष्ठावान तथा आदर्श व्यक्तियों को शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाये तो शिक्षा का स्तर ऊँचा उठ सकता है। आज हम जितना अन्य आवश्यकताओं पर, शान-शौकत पर खर्च करते हैं उतना शिक्षा पर नहीं। शिक्षा के नाम पर बच्चे को कापी-किताब खरीद दी, हर महीने फीस दे दी, बस। इसके अलावा शिक्षा का अपना कोई बजट नहीं। शिक्षित घरों में भी न समाचार-पत्र आते हैं, न पत्रिकायें। इधर किसी का ध्यान ही नहीं, यदि घर में अच्छी पुस्तकें हों, रंग-बिरंगी पत्रिकायें आती हों, घर के अन्य सदस्य उसे पढ़ें तो बच्चे भी उधर आकृष्ट होंगे और पढ़ने-लिखने की ओर प्रवृत्त होंगे। यह तो हुई अपने घरों की बात। सरकारी बजट में हम शिक्षा को सर्वोपरि नहीं रखेंगे, शिक्षा का स्तर कदापि नहीं उठ सकता। जब से शिक्षा में राजनीति ने प्रवेश किया है, तब से शिक्षा का तो भट्ठा ही बैठ

गया है। अब तो छात्रों के प्रवेश और अध्यापकों की नियुक्ति, प्रोन्नति में भी राजनीति पहल करने लगी है। राजनीतिज्ञ आये दिन छात्रों को निजी स्वार्थ हेतु भड़काते रहते हैं। जिससे छात्रों का अधिकांश समय आन्दोलन में चला जाता है। इससे शिक्षालयों में अनुशासनहीनता भी बढ़ती है। आये दिन अध्यापक अपमानित होते रहते हैं। जिस कारण अध्यापक शिक्षा से विरत हो रहे हैं। जिस कारण अध्यापक शिक्षा से विरत हो रहे हैं। यदि विद्यालयों में राजनीति प्रतिबन्धित कर दी जाये और राजनीतिज्ञ छात्रों को अपना हथियार न बनायें, गुमराह न करें तो शिक्षा का स्तर अवश्य उन्नत हो सकता है।

यहां स्कूल-कालेजों में छात्रों के लिए कोई आकर्षण नहीं है। शिक्षालयों को भारस्वरूप समझते हैं। वहां पहुंच कर जैसे-तैसे समय काटना चाहते हैं। इससे उनमें शिक्षा के प्रति अरुचि हो गयी है। उस अरुचि को दूर करने का उपाय करना होगा। स्कूल-कालेजों को ऐसा बनाना होगा जिससे बच्चों के अन्दर शिक्षा के प्रति ललक पैदा हो। वे अधिक से अधिक समय विद्यालय में रहना चाहें, विद्यालय छोड़ने की उनकी इच्छा ही न हो। तब कहीं जाकर शिक्षा का स्तर ऊँचा उठ सकता है।

भारत में शिक्षा उद्देश्यहीन है। उच्च-शिक्षा प्राप्त करने के बाद जहां आदमी में सूझ-बूझ एवं साहस बढ़ने चाहिए, नैतिक उन्नयन होना चाहिए, वहीं शिक्षा पाने के बाद भी वह अपने को अपंग पाता है। वह बस अपने को बाबूगिरी के योग्य समझता है। यदि बाबूगिरी नहीं मिली तो वह असहायों-सा जीवन जीने लगता है या देश व समाज के लिए सिरदर्द बनने लगता है। यह देख कर दूसरे भी प्रभावित होते हैं और शिक्षा के प्रति उदासीन होने लगते हैं। यदि शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाया जावे तो लोग शिक्षा की ओर आकर्षित होंगे, उसमें रूचि लेंगे और शिक्षा का स्तर स्वतः ही ऊँचा उठेगा।

भारत में शिक्षा के प्रति जन-जागृति भी नहीं है। शिक्षा में सुधार लाने के कार्य को लोग मात्र शिक्षकों व सरकार का ही दायित्व समझते हैं। शिक्षकों की क्या समस्यायें हैं ? सरकार की क्या समस्यायें हैं ? शिक्षा की समस्यायें क्या है ? इस में कौन से तत्व बाधक है ? यह सब सोचना सिर्फ सरकार का ही कर्त्तव्य नहीं है, लोगों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए। शिक्षा को आत्मोन्नति का साधन बनाना चाहिए। सत्य तो यह है कि बिना शिक्षा के आत्मोन्नति सम्भव ही नहीं है। जिस दिन लोगों में यह भावना दृढ़ हो जायेगी कि शिक्षा से ही हम अपनी वास्तविक उन्नति, वांछित उन्नति कर सकेंगे। उसी दिन से लोग शिक्षा की ओर झुकने लगेंगे और शिक्षा का स्तर ऊंचा उठने लगेगा। इसके लिए व्यापक प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है। यह काम प्रचारतन्त्र तो करेंगे ही, इस में उन्हें भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी होंगी जो शिक्षित है। उन्हें अपने आचरण द्वारा समाज में एक आदर्श उपस्थित करना होगा। जिससे लोगों में शिक्षा के प्रति झुकाव पैदा हो।

रोज अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं की सुर्खियों से शिक्षण संस्थानों में घटने वाली अवांछित घटनाक्रमों से आज प्रत्येक देशभक्त परेशान है। अपने भ्रष्ट आचरणों द्वारा शिक्षा के इन मन्दिरों को प्रदूषित एवं विकृत क्रियाकलापों से उनके तथाकथित ठेकेदार जबरन गड्ढे में धकेल रहे हैं। मासूम बच्चों के साथ ज्यादती हो या उनका दैहिक शोषण ये मामले रोज अखबारों की शोभा बढ़ा रहे हैं। बैंगलोर वाली घटना जिसमें मासूम के साथ यौन उत्पीड़न वाली दिल दहलाने वाली खबर होया अभी हाल में ही भिलाई (छ.ग.) में प्राचार्य द्वारा कक्षा ९वीं की छात्रा से अश्लील हरकत ये तमाम घटनाक्रम यह साबित करती है कि शिक्षा के मन्दिरों में शिक्षकों के रुप में जिन्हें माँ-बाप ने जिम्मेदार नागरिक बना देने का भरोसा जताया हो वे ही बच्चों के स्वर्णिम भविष्य के साथ खिलवाड़ करने से बाज नहीं आ रहे हैं। इस तरह की घटनाएं देश के विकास में कलंक है। ऐसे आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान बनना चाहिए जिससे यह क्षेत्र पवित्र रहे एवं देश के सर्वांगीण उन्नति में मददगार सिद्ध हो सके। तभी हम सच्चे अर्थों में शिक्षा के स्तर को उन्नत कर सकेंगे।

– आचार्य कर्मवीर

हिन्दी दिवस पर विशेष

हिन्दी के विकास में आर्यसमाज का योगदान

(१४ सितम्बर)

- डॉ. गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

प्रसिद्ध हिन्दी समालोचक डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है कि "हिन्दी गद्य प्रवाह और शैली निर्माण की दृष्टि से स्वामी जी चिरस्मरणीय रहेंगे। हिन्दी अपने विकास के जिन सोपानों से होती हुई इस देश की राजभाषा के पद तक पहुंची है, इसमें आर्यसमाज का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है।"

महर्षि दयानन्द द्वारा सन् १८७५ ई. में मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। ऋषि दयानन्द ने पराधीन भारत के लोगों में विदेशी दासता से मुक्त होने उसके स्वशासन और स्वभाषा की भावना जागृत करने में अभूतपूर्व योगदान दिया था। आर्यसमाज की स्थापना से पहले उन्होंने एकेश्वरवाद का प्रचार और मूर्तिपूजा का विरोध करने के लिए जनभाषा को अपनाया। उस समय की हिन्दी में ब्रज और अवधी का अत्यधिक प्रभाव था तथा भाषा संस्कृत से भी बोझिल थी। उसे देश के अलग-अलग क्षेत्रों में समझा नहीं जाता था। स्वामी ने संस्कृत को ही अपने प्रचार का माध्यम बनाया। उनकी भेंट बंगाल के एक बड़े सामाजिक कार्यकर्ता श्री केशवचन्द्र सेन से हुई। उन्होने महर्षि जी को परामर्श दिया कि वे अपना प्रचार संस्कृत की अपेक्षा हिन्दी में करें तो अधिक प्रभावपूर्ण होगा। स्वामी जी ने तभी से अपने विचारों को प्रकट करने का माध्यम हिन्दी को बनाया। उन्होने गुजराती होते हुए भी हिन्दी को अपना लिया और इस भाषा को आर्यभाषा की संज्ञा दी। स्वामी जी ने अपनी रचना ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, व्यवहार भानु, गोकरुणा निधि, संस्कार विधि आदि ग्रन्थों की रचना भी हिन्दी में ही की। हिन्दी का प्रचार आर्यसमाज का एक अंग बन गया। इनके अनुयाईयों ने भी हिन्दी में ही व्याख्यान देने तथा हिन्दी में ही अपनी सभाएं करने का कार्य आरम्भ कर दिया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का इतिहास में उल्लेख किया है कि स्वामी दयानन्द ने नव शिक्षित युवाओं के बीच वर्ष १८६३ से घूम-घूम कर व्याख्यान देना शुरु किया। वे व्याख्यान नई तरह की बहुत अच्छी और साधु भाषा में होते थे। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश इसी भाषा में लिखा। उन्होंने वेदों का भाष्य भी इसी भाषा में प्रकाशित किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शब्दों और वर्णों के सही-सही उच्चारण के लिए अभियान चलाया। उन्होंने इसके लिए २० पुस्तकों की एक श्रृंखला लिखी। इस श्रृंखला की पहली पुस्तक 'वर्णोच्चारण' शिक्षा है। इसमें उन्होने ६३ वर्ण अलग-अलग लिखे। सरल हिन्दी के लिए देश में सबसे पहले अभियान चलाया था, गुजराती मूल के स्वामी दयानन्द सरस्वती ने। उन्होंने समाज का समस्त साहित्य हिन्दी में प्रकाशित कराया तथा हिन्दी के माध्यम से ही अपने मत का प्रचार किया जिसके फलस्वरुप देश के प्रमुख नगरों में आर्यसमाज की शाखाएं तेजी से खुलने लगी और हिन्दी प्रचार कार्य आगे बढ़ता गया। आर्यसमाज द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर स्वभाषा, स्वधर्म, स्वदेश एवं स्वराज का आन्दोलन भी चलाया गया। आर्यसमाज के सत्संगों तथा वार्षिक अधिवेशनों में भी कार्यवाही हिन्दी में ही होती रही। समाज द्वारा पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार आदि प्रदेशों में अनेकों शिक्षण संस्थाएँ खोली गयी और इन संस्थाओं में न केवल हिन्दी एक विषय के रुप में पढ़ायी जाती थी अपितु शिक्षा के माध्यम के रुप में हिन्दी का प्रयोग किया गया। कन्या पाठशालाओं और गुरुकुलों को हिन्दी माध्यम से ही शिक्षा देने के लिए स्थापित किया गया।

ऋषि दयानन्द के प्रभाव से भारतीय जनमानस उद्वेलित हो उठा और भाषा, साहित्य तथा जनसंचार पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। आर्यसमाज के प्रबुद्ध और कर्मठ प्रचारकों, उपदेशकों, लेखकों और पत्रकारों नें हिन्दी को व्यावहारिक स्वरुप प्रदान किया। इससे खड़ी बोली पर आधारित हिन्दी का आश्चर्यजनक विकास हुआ। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की दिशा में क्रान्तिकारी कार्य हुआ। उसमें जहाँ

हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रचलन देश में प्रचुरता से हुआ वहीं अनेक प्रबुद्ध लेखक और सम्पादक भी इसके द्वारा कार्यक्षेत्र में आए। ऋषि दयानन्द के जीवनकाल में ही आर्यसमाज के पत्र आर्यदर्पण, वेद प्रकाश, आर्य विनिमय, आर्य सिद्धान्त, आर्यावर्त, भारतभगिनी, राजस्थान समाचार परोपकारी, तिमिरनाशक, ब्रह्मावर्त, आर्यमित्र, मार्तण्ड, पांचालपंडिता व सद्धर्म प्रचारक, भारतोदय, वीर अर्जुन मिलाप जैसे अनेक पत्र प्रकाश में आए। इसी श्रृंखला में आज अनेक पत्र आर्यसमाज के सिद्धान्तों से जन-जागरण में सन्नद्ध है जिसमें शांतिधर्मी, तपोभूमि, अग्निदूत, सत्यार्थ सौरभ, आर्य संसार टंकारा समाचार, आर्य लोक वार्ता, नूतन निष्काम पत्रिका, स्वस्ति पंथा, ओम सुप्रभा, अमृत पथ, आर्य सन्देश, वैदिक राष्ट्र आर्य संकेत, दयानन्द सन्देश, कुलभूमि, पवमान, वैदिक सार्वदेशिक आदि प्रमुख हैं।

आर्यसमाज का हिन्दी साहित्य को सबसे बड़ा योगदान यह इसने हिन्दी गद्य को एक सुस्पष्ट और परिमार्जित गद्य शैली प्रदान की जिसमें ज्ञान-विज्ञान के विविध विषयों की अभिव्यक्ति अत्यंत तर्कसंगत और कुशलतापूर्वक हो सकती थी। इस काल में ही भाषा में अपेक्षाकृत तत्सम शब्दों की खोज हुई और भाषा को संस्कृतनिष्ठ रखते हुए सरल और तर्कसंगत बनाने के प्रयास हुए। सारे देश में व्यापक रुप से समझी जाने वाली आधुनिक भारतीय भाषा के रुप में केवल हिन्दी ही थी जो खड़ी बोली के आधार के अनुरुप खड़ी हो सकी। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे संस्करण की भूमिका में स्वामी जी ने इसको स्पष्ट किया है - उससे पूर्व संस्कृत में भाषण करने पठन-पाठन में संस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने के कारण मुझको उससे पूर्व भाषा का विशेष परिज्ञान नहीं था, इससे भाषा अशुद्ध बन गयी थी। अब भाषा बोलने और लिखने का अभ्यास हो गया है, इसलिए इस ग्रन्थ को भाषा व्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी बार छपवाया है।

आर्यसमाज की प्रेरणा से ही काशी नगरी प्रचारिणी सभा जैसी संस्था की स्थापना हो सकी। श्री राम नारायण मिश्र ने जो आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द जी के पक्के अनुयायी थे, हिन्दी को व्यावहारिक रुप देने के लिए और उसे राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की।

आर्यसमाज ने जहां अनेक उत्कृष्ट विचारक, मनीषी सुधारक और पत्रकार उत्पन्न किये वहीं हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भी यशस्वी लेखक, कवि और साहित्यकार प्रदान किए जिनकी कृतियां हिन्दी साहित्य में विशिष्ट ग्रन्थ के रुप में स्थान रखती है।

आर्यसमाज की हिन्दी साहित्य को देन न केवल उत्तरी भारत तक सीमित रही अपितु इसके प्रभाव से दक्षिण में भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ा। १९८१ में महात्मा गांधी द्वारा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की मद्रास में स्थापना का निर्णय लिया गया था। स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ने वहां हिन्दी कक्षा चलायी तथा हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया। इससे सैकड़ों हिन्दी विद्वान लेखक कवि तथा हिन्दी पत्रकार सामने आए। अजन्ता, कल्पना, दक्षिणी भारती जैसी हिन्दी साहित्यिक पत्रिकाएं प्रारम्भ हुई। दैनिक हिन्दी मिलाप, दक्षिण समाचार जैसे उत्कृष्ट पत्र हैदराबाद से प्रकाशित हो रहे हैं।

आर्यसमाज ने न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में सराहनीय योगदान दिया है और इस भाषा को ज्ञान विज्ञान के माध्यम से उपयुक्त बनाकर इसे विश्व की आधुनिक भाषाओं की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। हिन्दी गद्य तो अपने प्रांजल, सुबोध और सुस्पष्ट स्वरुप के लिए सदैव ही महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के योगदान का ऋणी रहेगा।

पता : ११७, आदिल नगर, लखनऊ-२२६०२२

माहौल

खुशी देखते हैं न गम देखते हैं, प्रभु प्राणियों के करम देखते हैं।
बे सुध निगाहों से शरमाए नजर, जमाने की उतरी शरम देखते हैं।
तेरी सभ्य और ज्ञानवानों की दुनियां ने, ठुकरा दिया है धरम देखते हैं।
आराम तलबी में जीने की चाहत, से माहौल होता गरम देखते हैं।
नशे में नजर आ रहा है जमाना, पारसाओं के लरजा कदम देखते हैं॥

प्रासङ्गिक

"शिक्षक बनाम शिक्षक दिवस"

आचार्य प्रेम प्रकाश शास्त्री, २२/३ केन्द्रीय विद्यालय आवास परिसर, बिलासपुर छ.ग.

गुरु शिष्य की परंपरा आदिकाल से चली आ रही है महर्षि याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट रुप से उल्लेख किया – मातृमान्–पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद बालक का प्रथम गुरु माता, द्वितीय गुरु पिता और तृतीय गुरु सत्यज्ञान का उपदेश करने वाले शिक्षक जो उसे पुस्तकीय ज्ञान के अलावा लौकिक एवं पारलौकिक ज्ञान को आत्मसात् कराता है। वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली शिक्षा का प्रचलन था। जिसके तहत शिष्यों को अपने गुरुओं की छत्रछाया में रहकर ही वेदादिसत्यशास्त्रों का अध्ययन – अध्यापन कार्य करना होता था। राम, कृष्ण, अभिमन्यु ,आरुणि एवं आधुनिक युग में वैदिक ऋषि दयानन्द ने उसी का अवलम्बन कर शिक्षा प्राप्त की। यह शिक्षण का आदर्शरुप था।

५ सितम्बर को प्रतिवर्ष भारतवर्ष में **"गुरु दिवस या शिक्षक दिवस"** के रुप में मानया जाता है वस्तुतः वैदिक वाङमय में या भारतीय वैदिक चिन्तन में समस्त मनुष्यों का गुरु परमपिता परमेश्वर को ही माना गया है। वह ईश्वर सर्वशक्तिमान् एवं सर्वज्ञ होने तथा कालातीत होने से आदि गुरु है। योग दर्शनकार महर्षि पतञ्जलि ने योग दर्शन के समाधिपाद के २६वें सूत्र में आदिगुरु (परमेश्वर) के लक्षण इस प्रकार से निरुपित किया है।

"स एष पूर्वेषामापि गुरु : कालेनानवच्छेदात्"

अर्थात्- वह ईश्वर भूत भविष्यत् वर्तमान में उत्पन्न होने वाले सब गुरुओं का गुरुः विद्या देने वाला है। काल के द्वारा मृत्यु को प्राप्त नहीं होने से। लौकिक दृष्टिकोण से भी यदि हम गुरु शब्द पर विचार करें तो हमें यही विदित होता है कि

"गृह्णाति उपदिशति विद्यामाचारं यः सः गुरु :"

अर्थात्- जो विद्या का अपने शिष्यों को उपदेश करे उसे गुरु कहते हैं। ५ सितम्बर को हम उस महान् व्यक्ति का जन्म दिन मनाते हैं जो हमारे देश के द्वितीय राष्ट्रपति थे। उस महान् व्यक्ति के व्यक्तित्व के लोहा अंग्रेज शासक भी मानते थे। ऐसी विभूति का नाम था, स्वनामधन्य डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्। डॉ राधाकृष्णन विश्व के महान् चिन्तकों में से एक थे। वे अंग्रेजी साहित्य के ऐसे उद्‌भट्ट विद्वान थे कि उनके द्वारा व्यक्त किये गये शब्दों के अर्थ जानने के लिए स्वयं अंग्रेजों को जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी है, शब्दकोष (डिक्शनरी) देखना पड़ता था। यही कारण है कि उनके प्रति मस्तक सादर नतमस्तक हो जाता है। यही कारण है कि ऐसे महान् व्यक्तित्व के धनी स्वतंत्र भारत के उच्च पदों पर आसीन होने से पहले एक "शिक्षक" थे। वे शिक्षक की गरिमा को जानते थे, व पहचानते थे। समाज के लिए , राष्ट्र के लिये शिक्षक की भूमिका को भलीभाँति समझते थे। वे इस बात से अच्छी तरह विज्ञ थे कि शिक्षक तो समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित रहता है। परंतु **"समाज और राष्ट्र का शिक्षक के प्रति क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए ?"** इसके लिए वे सतत् प्रयत्नशील रहे वे मानते थे कि शिक्षक को समाज से तिरस्कार ही मिलता है। इन्ही कारणों से द्रवीभूत होकर उन्होने अपने जन्म दिवस को शिक्षकों के नाम पर समर्पित कर शिक्षक का सम्मान समाज में यथावत् बनाए रखने के लिए योगदान दिया। उनकी इस महान् उदारता के लिए शिक्षक समाज आज ऋणी है,और भविष्य में रहेगा।

शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता व समाज की रीढ़ की संज्ञा से विभूषित किया गया है। शिक्षक समुदाय इस प्रकार की संज्ञा से सुशोभित होकर फूला नहीं समाता, किन्तु यह क्षणिक ही होता है क्योंकि जब वह पाता है कि यह सब कुछ ढकोसला है, मात्र कोरी सहानुभूति है, तो उसका साफ सुथरा दिल शीसे की तरह चकनाचूर हो जाता है। जिस प्रकार

समाज व राष्ट्र शिक्षक से पूर्ण अपेक्षाएं रखता है उसी तरह शिक्षक जिसको पूर्ण तो नहीं अल्प ही समझों अपेक्षाएं रखता है लेकिन वे अपेक्षाएं धराशायी ही रह जाती है। वर्तमान शिक्षक जिसको गुरु कहते हैं शासन की नीतिओ एवं व्यवहारों से व्यथित है। जिसकी व्यथा-कथा सुनने वाला न शासन है न अधिकारी और न ही समाज। इतना होने पर भी शिक्षक से अपेक्षाएं बरकरार रहती हैं।५ सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाकर किसी न किसी प्रकार किसी न किसी प्रमुख व्यक्ति के द्वारा शिक्षक का सम्मान किया जाता है। और साल भर असम्मान किया जाता है। यह कहाँ की दोहरी नीति है ? शिक्षकों का सम्मान तो ठीक वैसे ही प्रतीत होता हैं जिस प्रकार भारत में मनाया जाने वाला पोला का पर्व, पर्व वाले दिन बैलों को खूब सम्मान होता है और सालभर दुर्दशा।

वैसे तो गुरु शिष्य की परंपरा आदिकाल से चली आ रही है महर्षि याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट रुप से उल्लेख किया - **मातृमान्- पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद** बालक का प्रथम गुरु माता, द्वितीय गुरु पिता और तृतीय गुरु सत्यज्ञान का उपदेश करने वाले शिक्षक जो उसे पुस्तकीय ज्ञान के अलावा लौकिक एवं पारलौकिक ज्ञान को आत्मसात् कराता है। वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली शिक्षा का प्रचलन था। जिसके तहत शिष्यों को अपने गुरुओं की छत्रछाया में रहकर ही वेदादिसत्यशास्त्रों का अध्ययन - अध्यापन कार्य करना होता था। राम, कृष्ण, अभिमन्यु ,आरुणि एवं आधुनिक युग में वैदिक ऋषि दयानन्द ने उसी का अवलम्बन कर शिक्षा प्राप्त की । यह शिक्षण का आदर्शरुप था। कालान्तर में शिक्षा में परिवर्तन हुआ है। राजघरानों में गुरु स्वयं राजकुमारों को विद्यादान हेतु उपस्थित होते थे। आचार्य द्रोण इस परंपरा के उदाहरण हैं। गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा और लगन से शिक्षा ग्रहण करने वालों में "एकलव्य" का नाम अमर है। और रहेगा भी । कुछ लोग अज्ञान वश ही **"एकलव्य और द्रोण "**को कलंकित करते हैं। प्राचीन काल में गुरु तथा शिष्य दोनों एक दुसरे के प्रति पूर्ण -रुपेण समर्पित थे, किन्तु आज शासन एवं समाज की व्यवस्था के कारण गुरु शिष्य में समर्पण की भावना समाप्त प्रायः है। शिक्षक समर्पण की भावना रखता है और उसी भावना से अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करने के प्रयास भी करता है। परंतु शासन समाज अपनी दोहरी नीति के कारण शिक्षक के इस समर्पण में बाधक होते हैं। शिक्षक का जो मूलकार्य है। उससे उसे वंचित रखा जाता है। शिक्षक से ऐसे अनेक अशिक्षकीय कार्य कराए जाते हैं जिससे शिक्षक अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर सकता है। फिर भी शासन समाज एवं पालक शिक्षक से सकारात्मक आशा रखते हैं। यह कहाँ तक तर्क संगत है ? **डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन** ने अपना जन्म दिन **"शिक्षक दिवस"** के रुप में शिक्षक के समाज को सौंपकर सम्मान दिलाए जाने का जो अभूतपूर्व कदम उठाया है, उनके इस गौरवपूर्ण कार्य के लिए शिक्षक समुदाय उन्हें कोटिशः नमन करता है। साथ ही उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

आज आवश्यकता है पूरे तंत्र को परिवर्तन की। समाज के सभी अंगों को पूरी तरह सशक्त कर आने वाली हमारी पीढ़ी को हम किस प्रकार सशक्त एवं कर्त्तव्योन्मुख बना सकते हैं, आइए इसी पर अपने विचार केन्द्रित करे क्रियान्वयन में सहयोग दें दो डॉ. राधाकृष्णन का सपना साकार होगा।

"विद्ययामृतमश्नुते"

माँ मुझे लो आँचल में

माँ, ओ माँ,
लो मुझे आंचल में
मत मारो मुझे, अपने गर्भ में
कुल का दिया, भले ही मैं न हूँ
पोते की ज्योति, मैं जीऊंगी जब तक
दोनों ही कुटुम्ब का, करुंगी मैं उद्धार
होऊंगी नहीं मैं, कभी भी गद्दार
मम्मी-पापा मुझे भी, यह संसार देखने दो
दादाजी-दादी जी, मुझे जीने दो
घर की मैं हूँ पोती, घर की मैं हूँ ज्योति
संस्कृति संस्कार की, निभाऊंगी मैं सब
ग्रंथों की सुरक्षा के लिए, फिर भी जन्म दो
मम्मी-पापा मुझे, यह संसार देखने दो।

डॉ. सुभाष नारायण भालोराव "गोविन्द"
"अवन्तिका", ए-२८, न्यू नेहरु नगर कालोनी,
ठाठीपुर, मुरार, ग्वालियर-४७४०११

विश्लेषणात्मक

वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द

- खुशहालचन्द्र आर्य

यह तो मैंने कई पुस्तकों में पढ़ा है कि मध्यकालिक साम्प्रदायिक आचार्यों जिनमें, सायण, उव्वट व महीधर मुख्य है। इन्होंने वेद-मन्त्रों का भाष्य, मन्त्रों के देवता, छन्द, पद, पदार्थ व सन्दर्भ आदि की उपेक्षा करके मन्त्रार्थ को विनियोग के अनुसार भाष्य किया है जिनसे अर्थ का अनर्थ हो गया है। जैसे वेदों में "गोवध" आया है। इन आचार्यों ने "गोवध" का सीधा अर्थ गो का वध करके यज्ञों में डालना कर दिया। इसी अर्थ से यज्ञों में पशुबलि का प्रचलन हो गया जिससे महात्मा बुद्ध जैसे लोगों का ईश्वर, वेद और यज्ञों के प्रति श्रद्धा भाव उठ गया। महर्षि दयानन्द ने बताया कि गो के कई अर्थ होते हैं। गाय के अतिरिक्त, सूर्य की किरण, इन्द्रियाँ, वाणी आदि को गो कहा जाता है। यहां गो का तात्पर्य इन्द्रियाँ है, यानि इन्द्रियों पर संयम रखना "गोवध" होता है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने वेदों की रक्षा की।

पूज्य आचार्य पं. उमाकान्त जी उपाध्याय ने एक पुस्तक लिखी है, जिसका नाम है "वेद और दयानन्द"। इस पुस्तक में आचार्य जी ने "विनियोग" को बहुत अच्छी प्रकार समझाया है। अन्य पाठकगण भी इसको समझ पायें इसलिये उसी पुस्तक का एक अंश मैंने एक लेख के रुप में उद्घृत किया है, वह इसी भांति है :-

वेद और विनियोग :- स्वामी दयानन्द ने वेदों के सम्बन्ध में प्रचलित अनेक भ्रमों, अन्धविश्वासों, ऐतिहासिक भूलों, आचार्यों की मान्यताओं के विपरीत भाष्यों में भूलों का निराकरण किया है। वेद भाष्यों के सम्बन्ध में सायणाचार्य आदि मध्यकाल के भाष्यकर्ता आचार्यों ने मन्त्रों के विनियोग के प्रसंग में भूल की है। आचार्य सायण, आचार्य उव्वर, आचार्य महीधर आदि ने विनियोगों के आधार पर मन्त्रों का अर्थ किया है। वेद में आये हुए मन्त्रों में पद, पदार्थ, देवता आदि का विचार करके अर्थ करना समीचीन होगा। किन्तु मध्यकालिक साम्प्रदायिक आचार्यों ने उनके समय में प्रचलित विनियोगों के आधार पर मन्त्रों के अर्थ किये हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि इन आचार्यों ने मन्त्रों के पद, पदार्थ, सन्दर्भ आदि सबकी उपेक्षा करके मन्त्रार्थ को विनियोग के अनुसार भाष्य किया। अब देखना यह है कि विनियोग है क्या और कैसे वह मन्त्रों के अर्थ को प्रभावित करता है।

विनियोग क्या है :- विनियोग शब्द में वि+नि+योग है। योग शब्द जिसका अर्थ है जुड़ना, मिलना, जोड़ना आदि (यूजिर योगे धातु है) वि और नि उपसर्ग है। वि का अर्थ है विशेष रुप से और नि का अर्थ है निश्चित रुप से। सो किसी मन्त्र को किसी कार्य में, किसी कर्मकाण्ड में विशेष प्रकार से निश्चित रुप से जोड़ लेना, उस मन्त्र का उस कर्मकाण्ड में विनियोग है। उदाहरण के लिए आर्य परम्परा में सोलह संस्कारों में कर्णवेध एक संस्कार है। इस कर्णवेध संस्कार में शिशु के कान के निचले भाग ललरी को विंध दिया जाता है। उसमें छेद किया जाता है। जिस समय कान में छिद्र किया जाता है, उस समय निम्न मन्त्र का पाठ किया जाता है -

भद्रंकर्णेभिःश्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यः यजत्राः ॥
स्थिरै रङ्गै स्तुष्टुवासं स्तनूभिर्व्यसेमहि देवाहितं यदा युः ॥

यजु. २५-२८

इसका तात्पर्य यह हुआ कि 'भद्रं कर्णेभिश्रृणुयाम' इस मन्त्र का विनियोग कर्णवेध नामक संस्कार विशेष पर, किसी मन्त्र का पाठ करना या उस मन्त्र को पढ़कर कोई कर्मकाण्ड करना या यज्ञ में आहुति डालना।

मध्यकालिक आचार्यों का मत :- सायणाचार्य आदि मध्यकालिक आचार्य की मान्यता यह है कि मन्त्रों के भाष्य या अर्थ उनमें विनियोग के अनुसार करना चाहिए। सो इन मध्यकालिक आचार्यों का सिद्धान्त हुआ कि अर्थ या भाष्य को मन्त्र के विनियोग का अनुगामी होना चाहिए।

स्वामी दयानन्द का मत :- स्वामी दयानन्द का कहना है कि मन्त्रार्थ को विनियोग से स्वतन्त्र होकर उसके प्रकरण-सन्दर्भ, पद, पदार्थ के अनुकूल करना चाहिए। इसका तात्पर्य यह हुआ कि मन्त्रार्थ अपने सन्दर्भ में विनियोग से स्वतन्त्र है और विनियोग मन्त्रार्थ का अनुगामी रहे।

मध्यकाल के आचार्यों के मत में विनियोग स्वतन्त्र है और मन्त्रार्थ को विनियोग के पीछे चलना चाहिए। स्वामी दयानन्द की मान्यता है, मन्त्रार्थ अपने सन्दर्भ, पद, पदार्थ के अनुसार स्वतन्त्र रहना चाहिए और विनियोग मन्त्रार्थ का, मन्त्रों के अर्थों की भावनाओं के अनुकूल होना चाहिए। अर्थात् विनियोग को मन्त्रार्थ का अनुगामी होना चाहिए, मन्त्र के अर्थ के पीछे चलना चाहिए।

कर्णवेध संस्कार में **'भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयाम'** इत्यादि का विनियोग इसलिए है कि इस मन्त्रांश का अर्थ है कि (हम कर्णेभि) कानों से भद्र सुने (श्रृणुयाम) किन्तु तब भूल हो जाती है जह हमारे भाष्यकार यह कहने लग जाते हैं कि यह मन्त्र है ही कर्णवेध के लिये। मन्त्र में और भी अनेक कुछ है।

मन्त्र का पूरा अर्थ इस प्रकार है - हे यजत्रादेवाः। हे यजनीय, सत्यकरणीय, दिव्यगुण विशिष्ट परमेश्वर ! हम कानों से भद्र सुने, आंखों से भद्र कल्याणकारी ही देखें, हम सुदृढ़ स्वस्थ अंगों से आपकी स्तुति करते हुए पूर्ण आयु को प्राप्त करें। इस मन्त्र में कानों से भद्र सुनने, आंखों से भद्र देखने और स्वस्थ दृढ़ अंगों से प्रभु परमेश्वर की प्रार्थना करते हुए पूर्ण आयु प्राप्त करने की प्रार्थना है। कान के छिद्र करने की को तो कोई बात है ही नहीं। पाठक यह सहज अनुमान कर सकते हैं कि मन्त्र के अर्थ या भाष्य को मन्त्र के देवता, छन्द, पद, पदार्थ के अनुसार करना ही उचित है। मंत्रार्थ को विनियोग के पीछे चलाना या पद-पदार्थ की उपेक्षा करके विनियोग के अनुसार अर्थ को तोड़ना-मरोड़ना अन्याय है। मन्त्रार्थानुसार ही विनियोग उचित है, न कि विनियोग के अनुसार अर्थ। अन्ततः मन्त्र तो अपौरुषेय है, परमेश्वर ने मानव के कल्याणार्थ उन्हें प्रदान किया। किस मन्त्र में क्या पद है, क्या छन्द है, क्या पूर्व है, क्या पर है, ये सब प्रभु प्रदत्त होने के कारण प्रश्न कोटि से ऊपर है। किन्तु कर्मकाण्ड और उनमें करणीय क्रियाएं, क्रियाओं में पठनीय मंत्र, किस मन्त्र को पढ़कर कौन सी क्रिया की जाय, यह सब निर्णय-निर्धारण ऋषियों ने परवर्ती काल में किया है। चारों संहिताओं में बीस हजार से अधिक मन्त्र है। कोई भी मन्त्र नहीं भी पढ़ा जाता। कहां, किस कर्म में किस मन्त्र को पढ़ा जाये ? बीस हजार से अधिक मन्त्रों में से चुनना है, यह सब परवर्ती काल में ऋषियों ने निर्धारित किया है। उनके अर्थ को छोड़कर अन्य तो होना ही नहीं चाहिए। अतः अर्थ के अधार पर ही विनियोग होना उचित है। किसी भी मन्त्र का कहीं भी विनियोग मनमानी करके फिर मन्त्रार्थ को विनियोग के अनुसार करना तो अनुचित है, अन्याय है। किन्तु दुर्भाग्य है कि सायण, महीधर आदि आचार्यों ने विनियोग के अनुसार मंत्रों का अर्थ किया है।

इस लेख से जान लिया गया कि मध्यकालीन आचार्यों ने जो वेद-भाष्य किये, वे गलत इसलिये हो गये कि उन्होने मन्त्रों का केवल विनियोग देखकर ही भाष्य कर दिया, जबकि उनको मन्त्र का देवता, छन्द, पद, पदार्थ व सन्दर्भ यानि किस प्रकरण में यह मन्त्र लिखा गया है। यदि यह देखकर भाष्य करते तो उनका भाष्य भी गलत नहीं होता। पर महर्षि दयानन्द ने इन सब बातों का ध्यान रखते हुए, अपने पद-भाष्य किये हैं। इसीलिये वे सही व उत्तम है और तर्क व विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं। यह महर्षि का मनुष्य-मात्र पर एक अनुपम उपकार है, इसीलिए महर्षि को वेदोद्धारक माना गया है।

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८० महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला), कोलकाता-७००००७

हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी कब बन सकेंगे ?

- **कन्हैयालाल आर्य**, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वैचारिक

हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्हें गुरु के रुप में महर्षि दयानन्द जैसा तपस्वी ऋषि मिला । वह एक ऐसा मार्गदर्शक था, जिसके सम्मुख सभी गुरु ऐसे विलुप्त होते चले गये जैसे सूर्य उदय होने पर चांद एवं नक्षत्रों की ज्योति धूमिल हो जाती है। उन्होंने अपने अपार ज्ञान एवं तपस्या के बल पर वेद रुप वाणी हमें प्रदान की, जिसे पूरा मानव जगत पढ़ सकता है, पढ़ा सकता है । **"स्त्री शूद्रो न ऽधीयाताम्"** स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं वाली वार्ता को परिवर्तित करते हुए यह सिद्ध कर दिखाया कि वेद पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का न केवल धर्म अपितु परम धर्म बताया । आर्यसमाज ने न जाने कितने ही अनूसचितों एवं जनजाति युवकों को वेद ज्ञान देकर पंडित बनने का गौरव प्रदान किया । आज जगह जगह वेदों, मन्त्रों के गान से यज्ञाग्नि प्रज्वलित हो रही है । महर्षि दयानन्द के महान आन्दोलन ने आज पौराणिक जगत में एक खलबली मचा दी है । आज उन हरिजनों को मन्दिरों में जाने का अधिकार दिलाया, उन्हें यज्ञोपवीत पहनाये और वेद पढ़ने का अधिकार दिया। महर्षि दयानन्द समाज के इस उपेक्षित वर्ग के मसीहा बन कर आये । संसार का एक भी सुधारक ऐसा नहीं जिसने समाज को ऊंचा उठाने के लिए विष के प्याले पिये हो, पत्थर खायें हो, अपमान के कड़वे घूंट पीयें हों और फिर भी मानव जाति को अमृत पिलाया हो । फिर भी यदि आज मानव जाति उनके उपकार को नहीं मानती तो यह उसकी कृतघ्नता होगी ।

महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में जो भी आया वह कृतकृत्य हो गया। चाहे वह श्रद्धानन्द हो या लेखराम, गुरुदत्त हो या हंसराज । सभी सोने के रुप में दयानन्द के सम्पर्क में आते गये और कुन्दन बन कर निकलते गये। परन्तु आज हम उनके उत्तराधिकारी क्या उस ओर बढ़ रहे हैं ? यदि नहीं तो क्यो ? आर्यो ! सोचो, विचारों, अपनी अन्तरात्मा में झांको। मैं भी झांकू, तुम भी झांको हम सभी झांके, तभी तो हम ऋषि के ऋण से उऋण हो सकेंगे । परन्तु दुर्भाग्य यह है कि हम दूसरों के दोषों को देखना चाहते हैं, परन्तु अपनी नहीं। आइये, आज से हम यह निर्णय ले कि दूसरों के दोष देखने की बजाय अपने दोष देखने प्रारम्भ करेंगे।

आज धर्म घट रहा है । पाप और पाखण्ड बढ़ रहा है। आज कथा, प्रवचन, सत्संग मात्र धार्मिक मनोरंजन बन कर रह गये हैं। परन्तु कभी आपने सोचा कि इन सब आडम्बरों से क्या आप को शान्ति मिलने वाली है । हम भीड़ जुटाने में लगे हैं हर तथा कथित गुरु अपने नाम के बड़े बड़े बैनर, चित्र इत्यादि लगवा कर अपनी प्रसिद्धि करा रहा है। उसे धर्म, कर्म से कोई वास्ता नहीं । बड़े-बड़े मंच सजाये जा रहे हैं। परन्तु सोचो ! इनका जरा भी स्थायी प्रभाव जनता पर पड़ रहा है। एक भीड़ जो विवेक शून्य एवं ज्ञान शून्य है उसे तथाकथित गुरु ताली बजवा कर सिर हिलवा कर, कथा के बीच खड़े होकर ठुमके लगवाकर तो असभ्यता का परिचय देकर, धर्म का प्रचार का नाम दिया जाता है क्या यहीं धर्म है ? क्या इसे सत्संग कहोगे ? जिस प्रकार फिल्मी नायक लोगों को विभिन्न मुद्राओं को दिखाकर मूर्ख बनाता है। उसी प्रकार आज कल यह तथाकथित धर्म गुरु लोगों को मूर्ख बना रहे हैं। परन्तु मैं इन्हें दोषी नहीं ठहराता। वह तो व्यापारी है व्यापार करना है। परन्तु महर्षि दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यों ! सोचो, क्या यह आडम्बर, पाखण्ड एवं ढोंग हमारी अकमर्ण्यता के कारण नहीं हो रहा है, जब से हमने आर्य समाज के प्रचार, प्रसार

करने की बजाय फोटो खिंचवाना, नेताओं के स्वागत करना और कुछ भजन सन्ध्या करा देना ही आर्यसमाज के उत्सव का उद्देश्य बना लिया है। तभी यह सब कुछ हो रहा है। वैदिक प्रचार एवं प्रसार लुप्त हो रहा है। तभी तो आज तथाकथित धर्म गुरु कूड़ा करकट बेच रहे हैं। क्योंकि वह दुकान अपनी ऊंची लगाकर अपना कूड़ा करकट बहुत महंगे दामों पर बेच रहे हैं और हम बढ़िया दुकानदार होते हुए अच्छा माल रखते हुए भी अपने वेद रुपी माल को लोगों के गले नहीं उतार रहे हैं। आइये, आज हम इस विषय पर सोचें।

आज दुखद पीड़ा यह है कि आज के आर्यसमाजी वेद प्रचार के कार्य को प्रमुखता की बजाय विद्यालयों, औषधालयों, दुकानों, मैरिज ब्यूरो आदि चलाने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। यह कार्य तो कोई भी संस्था कर सकती है। परन्तु वेद प्रचार का कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। अतः आर्य समाजी बन्धुओं ! यदि हम वास्तव में महर्षि दयानन्द के उपकारों को मानते है उनके ऋण से उऋण होना चाहते हो तो इन दूसरे कामों को प्रमुखता देने की बजाय वेद प्रचार को प्रमुखता दें, तभी हम महर्षि स्वामी दयानन्द को वेदों वाला कहने के अधिकारी हो सकेंगे। मैं ऐसा मानता हूँ कि विश्व में एक आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो उच्च स्वर से कहता है कि वेद की ज्योति जलती रहे। फिर यह कैसी जलेगी ? इन विद्यालयों, औषधालयों, बारातघरों के चलाने से नहीं बल्कि वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं प्रसार से जलती रहेगी। अतः आर्यों उठो ! जागो, और आज से एक प्रण लो कि आज हम विवादों, झगड़ों, कुर्सियों के लोभ की तिलांजलि देकर महर्षि दयानन्द के स्वप्न वेद के प्रचार और प्रसार में अपनी पूरी शक्ति जुटा देंगे। यदि हम ऐसा कर सके तो हम महर्षि दयानन्द की जय बुलाने के सच्चे अधिकारी बन सकेंगे।

पता : ४/४५ शिवाजीनगर, गुड़गांव, हरियाणा

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति
न चेदिहावेदीन् महती विनष्टिः।

इस जीवन में यदि ईश्वर को जान लिया तो सफलता है, यदि नहीं जाना तो महान् हानि है अर्थात् जन्म निष्फल है।

इस संसार में

क्या-क्या खेल हो रहे इस संसार में।
पानी भी बिक रहा बाजार में।।
दूध है सस्ता- पेप्सी-कोका कोला महंगा
भैंस हो गयी घोड़ी-गाय बिक रही कौड़ी-कौड़ी
क्या-क्या खेल हो रहे इस संसार में।
पानी भी बिक रहा बाजार में।।
डिग्री मिलती फुटपाथों पर
गंवार हो रहे हावी संसद पर
हिन्दी से रही चुपके-चुपके
अंग्रेजी मार रही महफिल में ठुमके
क्या-क्या खेल हो रहे इस संसार में।
पानी भी बिक रहा बाजार में।।

- *मुकेश कुमार* (एम.ए. अंतिम)
५०/५२, रिहावली, फतेहाबाद (आगरा) उ.प्र.

गुरुकुल हरिपुर में पञ्चम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ

हरिपुर। गुरुकुल हरिपुर जुनवानी जि. नुआपाड़ा में गत १०-८-१४ को श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबंधन) के अवसर पर गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य में तथा श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ हुआ (जिसकी पूर्णाहुति गुरुकुल के पञ्चम वार्षिक महोत्सव के अवसर पर ३०, ३१ जनवरी तथा १ फरवरी २०१५ को होगी।

संवाददाता : दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य गुरुकुल हरिपुर

आत्मनिरीक्षणात्मक धर्मार्य सभा और विद्वानों की भूमिका

- ★ आर्य विद्वानों का प्रचार अंततः आर्यसमाज का प्रचार है।
- ★ विद्वानों को किसी व्यक्ति विशेष अथवा डाला विशेष से बंधना नहीं चाहिए।
- ★ आर्यसमाज मंदिरों में शहर में उपलब्ध आर्य विद्वानों तथा पंडितों के दूरभाष अंकों को प्रदर्शित करें।
- ★ साप्ताहिक सत्संग का स्तर उठाना आवश्यक है। मंदिरों में ध्वनि विस्तारक यंत्रों का न होना चिंताजनक है।

– आचार्य डॉ. अजय आर्य

पिछले दिनों पूज्य गुरुदेव स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज की चरणरज अपने शीश पर लगाने का मुझे सौभाग्य मिला है। उनकी विरक्ति के लिए कुछ भी कहना आवश्यक नहीं है। पिछले दिनों मैं रक्षा मंत्रालय द्वारा **'विश्व की प्रगति में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का योगदान'** विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने दिल्ली गया था। महाराज श्री से मिलने की इच्छा बलवती हुई और मैं अपने पूज्य पिताजी के साथ गुरुकुल प्रभात आश्रम पहुंचा।

महाराज जी ने कुशल क्षेम पूछते हुए पिताजी से पूछा- आर्यसमाज जाते हो ? आर्यसमाज जरुर जाओ किन्तु आर्यसमाज में पद प्राप्त करने की इच्छा कभी मत करना यह गर्त में ले जाएगा। आज आर्यसमाज को जब मैं पद लोलुपों के चंगुल में देखता हूँ तो मुझे गुरुदेव की बात याद आती है। मैं स्वतः इस बात की कोशिश करता हूँ कि अपना पराया की राजनीति भरी दृष्टि से मुझे निजात मिले।

मुझे आज वह दिन याद आ रहा है जब मेरी मुलाकात छ.ग. प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान श्री अंशुदेव जी से हुई थी। मैं उनकी विनम्रता तथा अपने प्रति व्यक्त किये गये विश्वास का बहुत ही सम्मान करता हूँ। उस दिन प्रतिनिधि सभा के प्रधान साप्ताहिक यज्ञ में शामिल थे। मुझे भी मंच में बैठने का आग्रह किया गया किन्तु मैं प्रसन्न नहीं था क्योंकि जितने लोग मंच के ऊपर थे उतने ही लोग मंच के नीचे। आज लगभग दो वर्ष बाद मैं फिर प्रतिनिधि सभा के उसी प्रांगण में साप्ताहिक सत्संग में भाग ले रहा था (२०-७-१४)। स्थिति करीब-करीब वही थी। दिलीप आर्य जी ने मुझे साप्ताहिक सत्संग को संबोधित करने को कहा था। मैंने धर्म के प्रथम लक्षण पर केन्द्रित करके अपना व्याख्यान दिया था। हम आज पूरे प्रदेश में वेद प्रचार के अपने कार्यक्रम को लेकर अपनी छाती चौड़ी कर रहे हैं। रायगढ़, लैलूंगा के वेदप्रचार कार्यक्रमों के चित्र हमारी पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर सुशोभित है, किन्तु हकीकत और ही है। प्रतिनिधि सभा के प्रांगण में आयोजित साप्ताहिक वैदिक सत्संग की कोई खबर कभी कहीं देखी या पढ़ी नहीं जाती। विडम्बना यह है कि जहां हमारा मुख्यालय है, वहां ध्वनि विस्तारक यन्त्र (लाऊड स्पीकर) तक नहीं है। जब तक आर्यसमाज अपने साप्ताहिक सत्संगों के स्तर को नहीं उठाएगा तब तक आर्यसमाज के प्रचार कार्यक्रम बिना नींव के महल की तरह कमजोर होगा। सभा के कार्यालय मंत्री दिलीप आर्य जी जो आर्यनगर आर्यसमाज के अधिकारी भी हैं, से मेरी बात हुई। मैंने कहा कि मैं इस आर्यसमाज से अपने कुछ मित्रों को जोड़ना चाह रहा हूँ। उन्होंने बड़ी ही सत्यता के साथ कहा कि आने वाले कहीं निराश न हो जाएं। यह सच है कि हमारी स्थिति बहुत ही चिन्ताजनक है। जो लोग आर्यसमाज में अच्छा काम कर रहे हैं, उनसे भी समाज के अधिकारी चिंतित होते हैं। हम दिल से कुछ है और बाहर से कुछ और हैं। चाहते कुछ और हैं और कहते कुछ और हैं। किसी भी नये आदमी को आर्यसमाज में लाते हुए संकोच भी होता है कि उसे हम क्या कहकर आर्यसमाज से जुड़े रहने का आग्रह करें। अनेक सामाजिक संगठनों से जुड़ने का मुझे सौभाग्य मिला। वहां की व्यवस्था हमसे कई गुना बेहतर है। जब किसी आर्यसमाज के अधिकारी से बात करो तो वे यह कहकर अपनी कमियों को एक आवरण के पीछे छिपाने की

कोशिश करते हैं कि विचारों में हमसे श्रेष्ठ कोई नहीं है। यह दंभ हमें बहुत ही महंगा पड़ा है। आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ में धर्मार्य सभा का सदस्य होने का मुझे गर्व है। यह गर्व इस बात के लिये नहीं है कि औपचारिकता के लिए कोई पद या सदस्यता मुझे दे दी गई है। मैं हमेशा से पद लौलुप प्रवृत्ति से बचने की कोशिश करता रहा हूँ। पिछले महीने धर्मार्य सभा के संयोजक डॉ. कुञ्जदेव मनीषी से प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्यों की बैठक के दौरान मेरी मुलाकात हुई। इस मुलाकात के दौरान उनसे मेरी एक चर्चा हुई। इस चर्चा का विषय था **धर्मार्य सभा में विद्वानों की भूमिका**। कोई भी संस्था जब तक वित्त पोषित नहीं होती तब तक वह एक अच्छा परिणाम नहीं दे पाती। विद्वानों के संबंध में अक्सर कहा जाता है कि सरस्वती और लक्ष्मी एक साथ नहीं रह सकते। शायद यह हमारी व्यवस्था की विडम्बना है। जब तक समाज का नेतृत्व विद्वानों के हाथ में नहीं होगा तब तक किसी भी सकारात्मक परिवर्तन की अपेक्षा करना बेमानी है। बीरबल के बगैर अकबर का कभी कोई मूल्य नहीं। डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी मेरी इस बात से सहमत थे कि प्रतिनिधि सभा में हमारे विद्वानों की भूमिका को सशक्त करने की आवश्यकता है। आर्य विद्वानों का प्रचार परोक्ष रुप से आर्यसमाज का ही प्रचार है। मेरा एक सुझाव है कि प्रत्येक आर्यसमाज को अपने मुख्य द्वार पर सोलह संस्कारों की सूची तथा शहर में उपलब्ध आर्य विद्वानों की सूची तथा उनके दूरभाष नम्बरों को चस्पाकर रखना चाहिए। फ्लैक्स प्रिंटिंग से इसे बहुत आकर्षक ढंग से बनाया जा सकता है।

मैंने अपने जीवन में इसीलिये नियम बनाया हैं कि मैं ग्रामीण अंचल तथा विपन्न समझे जाने वाले क्षेत्रों में आयोजित होने वाले वेद प्रचार के कार्यक्रमों में भाग लेने की भरसक कोशिश करूंगा। बहुधा दूर-दराज के आर्यसमाजों से भी मुझे वेद विषय पर बोलने का निमंत्रण मिलता है -मैं विवशतावश इन निमंत्रणों को स्वीकार नहीं कर पाता हूँ। लोग मुझसे पूछते है दक्षिणा और पारिश्रमिक को लेकर कोई संकोच तो नहीं है। मैं यह स्पष्ट कर दूं कि वैदिक विषयों पर बोलना और वेद प्रचार के कार्यक्रम में भाग लेना मेरे लिए स्वान्तः सुख का विषय है। यह मेरे लिए आजीविका का साधन कभी भी नहीं रहा है। ईश्वर ने मुझे जो प्रदान किया है वह मेरे लिए पर्याप्त है। किसी भी आमंत्रण को अस्वीकारने का मात्र एक ही कारण है और वह है - समय का अभाव। मैंने इसीलिये अब व्यवस्थित रुप से वर्ष में तीन बार वेद प्रचार के लिए समय देने का निश्चय किया है। दशहरे और शीतकालीन की छुट्टियों में मेरे पास पांच से सात दिनों का समय होगा। मई और जून महीने में मैं एक माह का समय अपने वैदिक लेखन तथा भाषण के लिए सुरक्षित रखने की योजना बना रहा हूँ। मैं बड़ी ही विनम्रता के साथ उन वेदप्रेमी आर्यजनों से क्षमा मांगता हूँ, जिनका आमंत्रण मैं स्वीकार नहीं कर पाया हूँ। मैं आवश्यकता पड़ने पर पूर्णतः निःशुल्क रुप से भी अपनी सेवाएं देने को प्रस्तुत रहता हूँ।

मुझे यह जानकर बड़ी ही पीड़ा होती है कि कुछ लोग विद्वानों को भी अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा के लिए उपयोग करना चाहते हैं। कभी कभी तो उनकी क्षुद्र दृष्टि यह भी चाहती है कि विद्वान व्यक्ति उनसे पूछकर अपने कार्यक्रम तय करें। संस्कृत में एक सूक्ति है जिसमें कहा गया है कि विद्वान और राजा को समान नहीं समझना चाहिए क्योंकि राजा अपने देश में पूजा जाता है और विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है। बहुधा हम साधारण वाक्यों के भीतर छिपे रहस्य को समझ नहीं पाते हैं। यहां राजा को सीमित और विद्वान् के क्षेत्र को असीमित माना गया है। स्वदेश और सर्वत्र पदों का प्रयोग इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर किया गया है। मेरा यह व्यक्तिगत विचार है कि किसी भी विद्वान को किसी भी दल अथवा ग्रुप का हिस्सा नहीं होना चाहिए। आर्यसमाज से इतर भी विद्वानों की अपनी एक बड़ी भूमिका है, जिसे हम आज तय नहीं कर पा रहें हैं। सौ आर्यसमाजों को वैदिक मत समझाने से ज्यादा महत्वपूर्ण है किसी एक गैर आर्यसमाजी को आर्य वैदिक मत समझाया जाए। मुझे बहुधा लोग कहते हैं कि आप उस आदमी के कार्यक्रम में मत जाया करो, जहां दूसरे दल के लोग जुटते हैं। कई बार व्यक्ति विशेष का बायकाट करने की भी सलाह दी जाती है। मैं इससे इसलिए समहत नहीं हूँ क्योंकि यह महर्षि दयानन्द की मंशा तथा उनके उपदेशों के विरुद्ध है। महर्षि दयानन्द ने जब विद्वत्ता को परिभाषित किया तो लिखा जो परोपकारी, सत्यवादी और पक्षपात रहित हो। जो विद्वान् किसी पक्ष विशेष के लिए कार्य कर रहा है, वह स्वामी जी की दृष्टि में विद्वान् नहीं है। मैं हमेशा कोशिश

करता हूँ कि धन की लालसा अथवा पक्षपात से स्वयं को दूर रखने की कोशिश करूं। मेरे लिए हर वह व्यक्ति अपना है, जो दयानन्द को अपना कहता है वैदिक ज्ञान विज्ञान का सम्मान करता है। बहुधा मुझे भी सलाह दी जाती है कि अमुक व्यक्ति के घर अथवा कार्यक्रम में मत जाओ क्योंकि वह प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों को पसंद नहीं है। मेरा मानना यह है कि एक विद्वान की जिम्मेदारी यह है कि वह पक्षपात रहित होकर महर्षि के मार्ग पर चले और वेदमार्ग पर चलने के लिए दूसरों को प्रेरित करें। जह हम अपनी गलतियों को छिपाने कोई आवरण या कारण स्वतः बना लेते हैं तो फिर कोई सुधार की गुंजाईश नहीं रहती। आपके विचारों को जानने से पहले कोई भी व्यक्ति आपकी भाषा, आपके व्यवहार अथवा आपकी क्रिया के संपर्क में आता है। जिनका व्यवहार अच्छा नहीं है उनके विचार को भला कैसे कहा जा सकता है। मेरा मानना यह है कि देश-विदेश में जो भी व्यक्ति आर्यसमाज अथवा स्वामी दयानन्द का नाम लेता है, वह मेरा अपना है। मैं इसी को प्रेम का आधार मानता हूँ। एक बार दिल्ली के मूलचंद आर्य जी से बात हो रही थी। उन्होंने आर्यसमाजी विद्वानों की विडम्बना बताते हुए कहा था कि हमारे विद्वान आजकल वहां नहीं जाते जहां उनकी आवश्यकता होती है, वे वहां जाते हैं जहाँ उन्हें अपेक्षानुसार दक्षिणा मिलता है। यह कमोबेश आज के परिवेश में सच ही है। शायद अर्थप्रधान समाज के रचने की यही विडम्बना है। मूलचंद जी भी अपने श्रम तथा धन का उपयोग आर्यसमाज के प्रचार के लिए करते हैं।

रायपुर शहर में संजय शुक्ल, संजय शर्मा तथा काली माई चाय के संचालक शिवन गुप्ता जी ऐसे वेद प्रेमी हैं, जिनका आर्यसमाज से सीधा कोई संबंध नहीं था। परिवार भी घोर पौराणिक और परम्परावादी था। विगत कुछ वर्षों से मैंने देखा कि वेद का स्वाध्याय कर रहे हैं। संजय जी तो प्रतिदिन दैनिक यज्ञ करने का नियम कठोरता के साथ निभा रहे हैं। संजय शुक्ल जी वैदिक साहित्य का वितरण करते हुए आर्यसमाज के मन्तव्यों को प्रसारित करने का कार्य कर रहे हैं। ये दोनों महानुभाव आर्य विद्वानों की सेवा सत्कार के लिए बड़ी ही सहजता के साथ प्रस्तुत होते हैं। गुप्ता जी किसी भी यज्ञ में शामिल होने से पूर्व सामग्री के लिए ३१ प्रकार की जड़ीबूटियाँ लेकर उपस्थित होते हैं। रायपुर में एक और सज्जन हैं - राजेन्द्र अग्रवाल जी पतंजलि योग समिति से जुड़े हैं। इन्होंने अपनी योग कक्षा में प्रति रविवार वैदिक यज्ञ करने की संकल्प लिया है। इन सबका कार्य इन्हें आर्यसमाज के निकट लाता हुआ प्रतीत होता है। हमारे अनुरोध पर इन्होंने आर्यसमाज जाना भी आरम्भ किया है। ये सभी आर्यसमाज की पृष्ठभूमि से दूर थे। हमारे जैसे अनेक लोगों को संपर्क में आने के बाद ये आर्यसमाज के सिद्धान्तों को जानने का प्रयास कर रहे हैं। आर्यसमाज के कुछ मंदिरों में नए लोगों को बहुत ही संदिग्ध दृष्टि से देखा जाता है। इस विडम्बना पर कुछ भी कहना मुश्किल है। मैने शहर में देखा है कि आर्य मन्तव्यों का सम्मान करने वाले बहुत लोग हैं। आर्यसमाज के अधिकारियों की उपेक्षा अथवा अनुदारता के कारण ये आज भी आर्यसमाज से जुड़ नहीं रहे हैं।

धर्मार्य सभा धर्म की रक्षिणी सभा है। इसे आर्यसमाज के वैचारिक आन्दोलन का हिस्सा होना चाहिए। विद्वान् और विचार दोनों ही शब्द वि से आरम्भ होते हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने मन्तव्यों को स्पष्ट करते हुए कहा है कि विद्वान् को पक्षपात रहित होना चाहिए। जो कौम अपने विद्वानों, विचारकों अथवा त्यागी प्रचारकों का सम्मान नहीं करती वह अपने अस्तित्व के साथ जूझती रहती है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं होता कि आर्यसमाज के अधिकारी कूपमंडूक होते जा रहे हैं। कूपमंडूक प्रवृत्ति का अर्थ है, जो अपने आसपास अपनी श्रेष्ठता का आवरण ओढ़कर सत्य से विरत होने वाली प्रवृत्ति। कूपमंडूक कुएं में रहता हुआ सागर को भी कुएं से श्रेष्ठ सिद्ध करने की कोशिश करता है। हम सबको इस घातक प्रवृत्ति से बचने की जरुरत है। आर्यसमाज को अपने प्रचार कार्यक्रम आर्यसमाज के प्रांगण के बाहर करने की कोशिश करनी चाहिए अगर हम अपने विचारों को अपने तक ही रखेंगे तो यह अनुचित ही होगा। महर्षि दयानन्द का मानना है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

पता : जेड-२, गणपति विहार, बोरसी चौक, दुर्ग (छ.ग.)

सम्पादकीय टिप्पणी : उपर्युक्त अभिव्यक्ति में लेखक ने अपनी अन्तर्वेदना को जहां शब्द देने की कोशिश की है, वहीं समाज के अधिकारी व कार्यकर्त्ताओं को भी आत्ममूल्यांकन कर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होते रहने की प्रेरणा दी है, इसे अन्यथा न लें।

"प्यार हर शह में पल रहा"

प्यार ही है जिन्दगी, प्यार ही है बन्दगी
प्यार हर चीज हर शह में पल रहा,
प्यार के सहारे यह जहान चल रहा।

प्यार पाने के लिये जब धरा हो बेजार
तड़प तड़प जायें गगन रोये जार जार
प्यार के इन मोतियों से प्यास तब बुझे
रूप रंग के नया फिर धरा सजे
पूर्व सिन्दूर लिये धरती की मांग भरे
किरणों की परियां नित नया श्रृंगार करे
प्यार की कशिश लिये सागर उछल रहा
रात का आंचल पकड़ने दिन मचल रहा
प्यार के ....

प्यार में कशिश है जो लाये पास पास
प्यार से ही जिन्दगी में जीने की है आस
प्यार जब उर में उठे मनवा गाये गीत
जीवन यह स्वर्ग लगे मिले मन का मीत
छलक छलक जाय पनघट पे गागरें
मन्द मन्द पवन संग गीत गाये झांझरें
चाहे किसी रूप में ही प्यार पल रहा
हर हृदय में प्यार का यह दीप जल रहा
प्यार के ....

हमें वतन से प्यार है जो मां पुकारते
मां को हम से प्यार है जो हर बहार दे
यह हंसते हुए खेत फूलों की क्यारियां
ममता भरी प्यार भरी गायें लोरियां
प्यार है तो मिल के बने हम एक कौम
प्यार है तो चल रहे मिला के हम कदम
मौत की आगोश में गिर कर सम्हल रहा
प्यार ले के देश का जवान चल रहा
प्यार के सहारे यह जहान चल रहा।

मोहनलाल चड्डा "सरहदी"
173, एमआईजी-II, आमदीनगर,
हुडको भिलाई.

हास्यम्

☺ ☺ ☺ ☺ ☺

रामायण पर प्रवचन चल रहा था। स्वामी जी ने पूछा - "बताइये कि अयोध्या में इतने सुख सुविधाओं के बावजूद सीता मैया राम लखन के साथ कष्टपूर्ण जीवन जीने के लिये जंगल में क्यों चली गई ?"

एक महिला ने जवाब दिया - "क्योंकि सीता जी चालाक थीं वे तीन-तीन सास के साथ रहकर मुसीबत मोल लेना नहीं चाहती थी।"

☺ ☺ ☺ ☺ ☺

स्कूल में गणित और इतिहास के शिक्षक में कहा सुनी हो जाती है। इतिहास के शिक्षक चिल्लाकर बोलते हैं - मैं अकबर की सेना बुलवाकर तुम्हारी घेराबंदी कर तुम्हें कालकोठरी में डलवा दूँगा।

इस पर गणित के शिक्षक बोलते हैं - अकबर की सेना को बुलवा कर तो देखों। मैं पूरी सेना को कोष्टक में डालकर शून्य से गुणा कर दूँगा।

☺ ☺ ☺ ☺ ☺

तीन बच्चे अपने-अपने दादाजी के भुलक्कड़पन की महिमा बखान कर रहे थे। पहला बच्चा -मेरे दादा जी न, इतने भुलक्कड़ हैं कि रोज मुझसे पूछते हैं कि तुम किस कक्षा में पढ़ते हो?

दूसरा बच्चा - मेरे दादाजी तो चश्मा पहन कर दिन भर अपना चश्मा खोजते रहते हैं।

तीसरा बच्चा - ये तो कुछ भी नहीं है। मालूम है ! मेरे दादाजी एक बार रात में बाहर से लौटे तो अपनी छड़ी को बिस्तर में सुला दिया और खुद दरवाजे के कोने में सुबह तक खड़े रहे।

☺ ☺ ☺ ☺ ☺

मनोज साहू
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)

पीयूष-प्रवाह

विदुर नीति

प्रश्नोत्तर माला

- आचार्य पं. वासुदेव व्रती वेदश्रमी

विशेष :- यह ग्रन्थ कितना महत्वपूर्ण है कि स्वयं ऋषि दयानन्द जी ने अनेक राजे महाराजाओं को पढ़ाया है । सम्पूर्ण ग्रन्थ को आचार्य श्री पं. वासुदेव व्रती जी द्वारा रोचक शैली से प्रश्नोत्तर के रुप में प्रस्तुत किया जा रहा है :- सम्पादक

प्रश्न : पण्डित की कार्य शैली किस प्रकार की होती है ?

उत्तर : जिसके भावी कार्यक्रम को, गुप्त विचार को, गुप्त विचारी मन्त्रणा को कोई नहीं जानता प्रत्युत किये हुये को जानते हैं। यह पण्डित की कार्यशैली है।

प्रश्न : विद्वान् के कार्य में कौन विघ्न नहीं डाल सकते ?

उत्तर : शीत उष्ण, भय-रति, समृद्धि असमृद्धि।

प्रश्न : मूर्ख के ३ लक्षण बताईये ?

उत्तर : (१) अपठित होता हुआ घमण्डी।
(२) दरिद्रा होता हुआ भी बड़े मनोरथों वाला।
(३) कर्म बिना धन को चाहने वाला।

प्रश्न : कौन सा तीर प्रजा-राजा सहित सम्पूर्ण राष्ट्र को विध्वंस कर देता है, परन्तु वह तीर न शस्त्र है न अस्त्र।

उत्तर : मन्त्रविप्लव। गुप्त मन्त्रणा का असमय प्रकट हो जाना।

प्रश्न : धरती किन दो को निगल जाती है ?

उत्तर : (१) अन्याय का विरोध न करने वाले राजा को।
(२) प्रवास न करने वाले ब्राह्मण को।

प्रश्न : धन के २ अतिक्रमण क्या है ?

उत्तर : (१) अपात्र को देना (२) पात्र को न देना।

प्रश्न : नरक के ३ द्वार कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : काम, क्रोध, लोभ।

प्रश्न : किन चार व्यक्तियों से विचार-विमर्श न करें ?

उत्तर : (१) मूर्खों के साथ (२) विलम्बकारी के साथ।
(३) जोशीलों के साथ (४) खुशामदियों के साथ।

प्रश्न : संसार में मनुष्य जहां भी जावेगा उसके पीछे पीछे ५ व्यक्ति रहेंगे ही, वे ५ कौन कौन हैं ?

उत्तर : शत्रु, मित्र, उदासीन, आश्रय, आश्रित।

प्रश्न : त्यागने योग्य ६ दोष कौन कौन से हैं ?

उत्तर : निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य, दीर्घ सूत्रता।

प्रश्न : कौन ६ किन छहों पर निर्वाह करते हैं ?

उत्तर : (१) चोर प्रमादी पर (२) चिकित्सक रोगी पर,
(३) वैश्याकामियो पर (४) याजक यजमानों पर
(५) राजा झगड़ालुओं पर (६) पण्डित मूर्खों पर

प्रश्न : कौन ६ नित्य दुखी रहते हैं ?

उत्तर : (१) ईर्ष्यालु (२) घृणा करने वाला (३) असन्तोषी (४) क्रोधी (५) नित्यशंका करने वाला (६) दूसरे के भाग्य पर जीने वाला।

प्रश्न : व्यसनकारक दुखदायी ७ दोष कौन कौन से हैं ?

उत्तर : (१) स्त्रियों के प्रति आसक्ति (२) जुआ (३) शिकार (४) मद्यपान (५) कटुवचन (६) बहुत कठोर दण्ड (७) अर्थदूषण।

प्रश्न : विनाश को प्राप्त होने वाले ८ निमित पतन के पूर्व लक्षण कौन से हैं ?

उत्तर : (१) ब्राह्मणों से बैर करने की पहल करता है।
(२) ब्राह्मण उसका विरोध करते हैं।
(३) ब्राह्मणों का धन छिनता है।
(४) ब्राह्मणों की हत्या करना चाहता है।
(५) ब्राह्मणों की निन्दा से प्रसन्न होता है।
(६) ब्राह्मणों की प्रशंसा को पसन्द नहीं करता है।
(७) धर्म कार्यों में इसको स्मरण नहीं करता है (निमंत्रण नहीं देता)
(८) ब्राह्मणों के याचन से कूढ़ता है।

प्रश्न : ब्राह्मण का लक्षण क्या है ?

उत्तर : वेद शास्त्रों का विद्वान, अध्यापन, स्वाध्यायशील, यज्ञ करना-कराना, विद्या का विस्तार करने वाला, परोपकारी, संयमी, व्यवहार कुशल, तपस्वी, चरित्रवान।

प्रश्न : श्रेष्ठ कवि कौन होता है ?

उत्तर : जो मनुष्य ९ द्वार वाले, ४ स्तम्भ वाले, ५ साक्षी वाले शरीर को जानता है।

९ द्वार = २ आँखे, २ नासिका छिद्र, २ कर्ण छिद्र, १ मुख, २ मल मूत्र द्वार

३ स्तम्भ = वात-पित्त-कफ

५ साक्षी = ५ ज्ञानेन्द्रिय (चक्षु श्रोत्र, जिह्वा, घ्राण, त्वक्)

प्रश्न : कौन १० मनुष्य धर्म को नहीं जानते ?

उत्तर : (१) नशा करने वाला (२) असावधान (३) पागल (४) थका हुआ (५) क्रोधी (६) भूखा (७) शीघ्रकारी (८) लोभी (९) डरा हुआ (१०) कामी=विषर्यी।

प्रश्न : शत्रुओं पर कौन विजय प्राप्त करता है ?

उत्तर : (१) जो विपत्ति में भी दुखी नहीं होता।

(२) जो प्रमाद रहित (सावधान) होकर उद्योग करता है।

(३) जो कठिन परिस्थिति को भी सम्भाल लेता है।

(४) जो असमय दुख झेलने को तैयार रहता है।

प्रश्न : सब संसार का गुरु कौन बन सकता है ?

उत्तर : जो किसी के सुझाए बिना अपनी भूल जानकर लज्जित होता है, वह सब संसार का गुरु हो सकता है।

प्रश्न : इन चारों में से कौन किससे देखता है ? अर्थात् तीसरी आँख (ज्ञान नेत्र) इन चारों का क्या है ?

(१) गौ (२) ब्राह्मण (३) राजा (४) सामान्य जन।

उत्तर : (१) गौवें गन्ध से देखती है। गौओं की तासरी आँख गन्ध से जानना है।

(२) ब्राह्मण वेदों से देखते हैं। ब्राह्मण की तीसरी आँख वेद है।

(३) राजा गुप्तचरों से देखता है। राजा की तीसरी आँख गुप्तचर है।

(४) सामान्यजन दो आँखों से देखते हैं। इनकी तीसरी आँख नहीं होती।

पता : ग्राम कुसमीसरार, पो.-किसडी, व्हाया-सरायपाली, जिला-महासमुन्द (छ.ग.) 493558

(१४ सितंबर हिन्दी दिवस के अवसर पर)

हम सादर हिन्दी अपनाएँ....

हिंदी के द्वारा सम्पूर्ण भारत को एकता सूत्र में पिरोया जा सकता है : *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

है आधी आजादी अपनी, पूरी आजादी को पाएँ।
तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ॥

❀

अंग्रेजों को दूर भगा कर, अंग्रेजी से चिपक गए हम।
आधी आजादी पा कर, लहराएं अंग्रेजी का परचम।
हिन्दी को सम्मान मिले तब, हम पूरे स्वाधीन कहाएँ।
तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ॥

❀❀

पढ़ें, लिखें, बोले हम हिन्दी, हिन्दी है जन-जन की भाषा।
अंग्रेजी अपना कर अब तक, हम उपजाते रहे निराशा॥
हिन्दी के प्रति आओ, अपना हम पुनीत कर्त्तव्य निभाएँ।
तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ॥

❀❀❀

बोल बोल कर अंग्रेजी, हम दुनिया भर को बता रहे हैं।
हम गुलाम हैं अंग्रेजो के, यही आज भी जता रहे हैं॥
हिन्दी तो भारत की भाषा, आओ संकल्पित हो जाएँ।
तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ॥

❀❀❀❀

भारत तो स्वाधीन हो गया, हिन्दी तब भी पराधीन है।
अंग्रेजी के रहते, अपनी यह आजादी दीन, हीन है॥
भारत के मानस से आर्यों, अंग्रेजी का भूत भगाएँ।
तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ॥

है आधी आजादी अपनी, पूरी आजादी को पाएँ।
तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ॥

❀

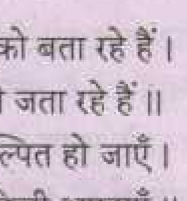

रचयिता - हरिकुमार साहू,
गोंड़पारा, बिलासपुर (छ.ग.)

हमारे आदर्श - डॉ. अशोक आर्य

दण्डी गुरु विरजानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती को महर्षि बनाने वाले, इतिहास में स्वर्णाक्षरों में स्थान पाने वाले दण्डी गुरु विरजानन्द जी का जन्म १८३५ वि. तदनुसार १७७८ ई. को पंजाब के करतारपुर के समीप गंगापुर गांव के सारस्वत ब्राह्मण पं. नारायणदत्त जी के यहां हुआ। पंचवर्षीय अवस्था में चेचक के कारण आंखों की ज्योति जाती रही। पिता ने घर पर ही संस्कृत की शिक्षा दी, किन्तु छोटी आयु में ही माता-पिता ने साथ छोड़ दिया। भाई व भावज के व्यवहार से तंग आकर गृह त्याग कर ऋषिकेश व फिर कनखल चले गए। यहां स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास दीक्षा लेकर विरजानन्द नाम पाया।

कुछ समय कनखल निवास के पश्चात् काशी चले गए, जहां विद्याधर जी से उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की। यहां से गया जाकर अध्ययन व अध्यापन किया। यहां से क्रमशः कलकत्ता, सोरों, गड़ियाघाट गए। यहां एक दिन मन्त्रपाठ करते स्वामी जी को अलवर नरेश ने देखा तो वह उन्हें इस शर्त पर अलवर ले गए कि वह स्वामी जी से प्रतिदिन शिक्षा लेंगे तथा जिस दिन नहीं आवेंगे, उस दिन स्वामी जी अलवर छोड़ सकते हैं। शीघ्र संस्कृत सिखाने के लिए स्वामी जी ने **"शब्द बोध"** पुस्तक की रचना की। एक दिन राग रंग में मस्त अलवर नरेश गुरु जी के पास जाना भूल गया, बस स्वामी जी ने उसी दिन अलवर से प्रस्थान कर पुनः सोरों के गड़ियाघाट जा विराजे। यहां स्वामी जी को भयंकर रोग ने आ घेरा। स्वामी जी के शिष्य उन्हें अपनी सेवा के बल पर मौत के मुंह से वापिस लाये। अब स्वामी जी यहां से मुरसान, भरतपुर होते हुए मथुरा पहुंचे। यहां स्वामी जी ने पाठशाला खोली तथा नियमित शिक्षा दान करने लगे। पढ़ाने की उत्तम शैली के कारण शिक्षा के केन्द्र काशी से भी शिक्षार्थी स्वामी जी के पास आने लगे। स्वामी जी देश को स्वाधीन करा पुनः विश्व गुरु के रूप में देखना चाहते थे। वह जानते थे कि राजा के सुधार से लोग स्वयं ही सुधर जावेंगे। यही कारण है कि आपने राजाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। मथुरा में शास्त्रार्थ की चुनौती मिली, जिसे स्वीकार किया किन्तु यह शास्त्रार्थ कुटिलता की भेंट चढ़ गया। स्वामी जी अष्टाध्यायी और महाभाष्य नामक आर्ष ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों को धूर्तों की कृति मानते थे। अतः स्वामी जी आर्ष ग्रन्थों के प्रचार व प्रसार में जुट गए। सन् १८५७ के भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के आप जनक थे। इस में भाग लेने वाले सभी राजा आपके शिष्य थे। यह योजना आपने अपने गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी के आदेश से बनाई। इस योजना पर सभी शिष्य शासकों ने अमल किया। स्वामी जी एक सर्वधर्म सभा के माध्यम से भारत को एक संगठन में बांधना चाहते थे किन्तु जयपुर के राजा रामसिंह के इसमें रुचि न लेने से ऐसा सम्भव नहीं हो सका। स्वामी जी की शिक्षा की प्रसिद्धि चतुर्दिक फैल रही थी, किन्तु स्वामी जी भारत के उद्धार के लिए आर्ष ग्रन्थों के प्रसारार्थ शिष्य खोज रहे थे, इन्हीं दिनों प्रभु आदेश से स्वामी दयानन्द सरस्वती आपको शिष्य स्वरूप मिले। १९१७ वि. तदनुसार १८६० ई. को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरु जी की इच्छानुरूप आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया। गुरुजी ने स्वामी दयानन्द को अपने सम विद्वान् बनाया तथा वैदिक प्रचार व स्वाधीनता आदि का बोझ अपने कन्धों से उतार दयानन्द के कन्धों पर दे डाला। इस प्रकार गुरु विरजानन्द को इस बात की खुशी थी कि जैसे शिष्य की आवश्यकता थी वह उनको अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में मिल गया। सम्वत् १९२५ वि. आश्विन की बदी त्रयोदशी सोमवार तदनुसार सितम्बर १८५८ ई. को निश्चित ही इस संसार से विदा हुए। उनके देहावसान का समाचार सुन महर्षि दयानन्द सरस्वती के मुख से निकला आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है। आपका जीवन आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार को समर्पित था। जब तक सृष्टि रहेगी आपका नाम सूर्य के समान चमकता रहेगा। **पता - ११६, मित्र विहार, मण्डी डबवाली, हरियाणा**

बोध कथा राजा जनश्रुति और रैक्य मुनि

राजा जनश्रुति को चिड़ियों की भाषा समझने की सामर्थ्य प्राप्त थी। हंसो की जोड़ी बात कर रही थी कि जनश्रुति से बड़े तो मुनि रैक्य हैं जो सदा परमार्थ में लगे रहते हैं। गाड़ीवान रैक्य के बड़ा होने की बात से उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। दूसरे दिन उन्होने उस गाड़ीवान की खोज कराई और बहुत सा धन, अश्व और आभूषण लेकर मुनि रैक्य के पास गये और बोले - आपकी कीर्ति सुनकर यहाँ आये हैं, हमें ब्रह्म-विद्या का उपदेश दीजिए। रैक्य मुनि ने उत्तर दिया - राजन्! ब्रह्म-विद्या सीखना है तो अंतरंग पवित्र बनाओ। अहंकार को मिटाकर, श्रद्धा-विश्वास तथा नम्रता को धारण कर ही तुम सच्चा आत्म ज्ञान प्राप्त कर सकोगे। जनश्रुति को अपनी भूल ज्ञात हुई और वे सिद्धि सम्पादन का अहं त्याग कर अन्दर से स्वयं को महान बनाने में लग गये। मध्यकाल में जितने भी संत हुए हैं उन्होने भगवान की कृपा इसी प्रकार पाई है। छोटी जाति के माने जाने वाले, ज्ञान की दृष्टि के सामान्य पर अंदर से महान ये सभी संत पवित्रता की कसौटी पर खरे उतर कर ही ईश्वर के प्रिय पात्र बने, लोक श्रद्धा भी पा सके।

सन्त तुकाराम कुनवी जाति में पैदा हुए थे जो उन दिनों एक तरह से नीची कौम मानी जाती थी। लेकिन अपने सद्‌गुणों, सद्व्यवहार, भगवद्‌भक्ति, ज्ञान आदि के कारण तुकाराम भक्तों-सन्तों की श्रेणी में माने गये। आज भी दक्षिण भारत में संत तुकाराम के अभंग उसी तरह गाये जाते हैं जैसे मीरा, सूर, तुलसी आदि की रचनाएँ। सन्त रैदास जाति के चमार थे लेकिन अपने सद्‌गुणों और भगवत्‌भक्ति के द्वारा वे उत्कृष्ट व्यक्तियों की श्रेणी में आ गये। भारत में संत रैदास का न केवल निम्न जाति में ही वरन् उच्च वर्ग में भी सम्मानयुक्त और पूज्यनीय स्थान है। संत कबीर जाति से जुलाहा थे। लेकिन उनके ज्ञान, विद्वता, ईश्वर-निष्ठा, सज्जनता के कारण सारे भारतवासी उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखते आये हैं। संत कबीर ने न केवल मानव-मात्र को समान माना वरन् उन्होने जाति-पांति ऊँच-नीच, वर्ग भेद की खुले शब्दों में निन्दा की। कबीर ने इन सिद्धान्तों से लोग इतने प्रभावित थे कि निम्न जाति के लोगों के अतिरिक्त उच्च वर्ग के हिन्दू , मुसलमान दोनों ने ही इन्हें अपना माना। भगवान की दृष्टि में वही सच्चा भक्त हैं जो दूसरों के कष्ट में सहभागी बनता है वह अपना सुख और को बाँटता है। भले ही वह पूजा अर्चना न कर पाये अपनी इस परमार्थयुक्त कर्म साधना से ही वह ईश्वर का प्रिय पात्र बन जाता है। **सौजन्य - प्रज्ञापुराण,** मथुरा

सन्तों के स्वाभाविक गुण

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधिविक्रमः।
यशसि चाभिरतिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥ (भर्तृहरि)

भावार्थ : बड़े से बड़े सङ्कट की सम्प्राप्ति पर भी घबराते नहीं। धैर्य्य से कभी च्युत नहीं होते। अभ्युदय चाहे कितना ही क्यों न हो जावे परन्तु क्षमा रुपी गुण का त्याग नहीं करते हैं। सभा-परिषदादि में वाणी का चातुर्य्य उनका देखने लायक होता है। युद्ध का अवसर उपस्थित हो जावे तो पराक्रम ही दिखलाते हैं, कभी पीछे नहीं हटते और अपनी कीर्ति के प्रति सदैव उदासीनता बतलाते हैं। व्यसन रखते हैं तो केवल शास्त्रों के अध्ययन का ही। महान् आत्माओं, श्रेष्ठ पुरुषों के तो ये अकृत्रिम सहजसिद्ध स्वाभाविक ही गुण है? इन्हें डालने की भला उन्हें क्या?

- सुभाषित सौरभ

पूर्ण विकसित द्वीप सिंगापुर से आचार्य आनन्द पुरुषार्थी की एक चिट्ठी

ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रास्तु । ३ मई २०१४ को प्रातः ११ बजे एशिया के सर्वाधिक वैभवशाली देश सिंगापुर के चांगी एयरपोर्ट पर हम एयर इण्डिया के वायुयान से पहुंचे । ये हमारी आठवी विदेश यात्रा है । ९ मई को दोपहर ३ बजे सिंगापुर में भारत की महामहिम राजदूत श्रीमती विजय ठाकुर सिंह से एक शिष्ट मंडल के साथ जाकर मुलाकात की । आप हिमाचल प्रदेश की है । इसके पूर्व ८ मई को लोकसभा के सांसद सत्तारूढ़ पीपुल्स एक्सन पार्टी के वरिष्ठ नेता, अनेक कंपनियों के स्वामी व सफल उद्योगपति, लोकसभा के उपसभापति सरदार श्री इन्द्रजीत सिंह से उनके कार्यालय में जाकर हम भेंट कर चुके थे । दोनों ही महानुभावों को हमने वैदिक साहित्य भेंट किया और नवंबर में आर्य महासम्मेलन सिंगापुर के अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव में आने का आग्रह किया । दोनों ने ही इसकी स्वीकृति प्रदान की । अनेक संस्कृतियों व सभ्यताओं को मानने वाले निवासियों की स्थली सिंगापुर ६३ छोटे छोटे द्वीपों के समूह का नाम है । ये कोलकाता से तीन हजार व दिल्ली से ४५०० किलोमीटर की दूरी पर है । इसका क्षेत्रफल मात्र ७१६ वर्ग किलोमीटर होने से लगभग बैंगलोर के बराबर है । प्राचीन काल में सिंटो का द्वीप होने से यह सिंहपुर से सिंगापुर हुआ । सुमात्रा के राजा श्री विजया जी का इस पर अधिकार था । ग्यारहवीं शताब्दी में दक्षिण भारतीय सम्राट श्री राजेन्द्र चोल जी ने इस जीत लिया । १६१३ में पुर्तगालों ने आग लगाकर इसे तहस-नहस कर दिया था पर जौहर के सुल्तान के अधीन रहा । सुल्तान हुसैन शाह को व्यापार का हवाला देकर ईस्ट इंडिया कम्पनी ने संधि कर कब्जा कर लिया ।

द्वितीय विश्व युद्ध में कुछ वर्ष पूर्व जापान के अधिकार में भी रहा, परन्तु ब्रिटेन के करारी हार के बाद पुनः ब्रिटिश कालोनी बन गया । ३१ अगस्त १९६३ में इंग्लैंड ने इसे आजाद तो किया पर वे इसे मलेशिया से संयुक्त होना पड़ा । नेताओं के सैद्धान्तिक मतभेदों के चलते ९ अगस्त १९६५ को यह पृथक स्वतन्त्र राष्ट्र बना और तब से इसने अद्भुत उन्नति की है । यहां की जनसंख्या ५४ लाख है, जिनमें बौद्ध ३४%, ईसाई १८%, मुस्लिम १४%, हिन्दू ५%, अन्य ३% और १६% ऐसे भी लोग है जो किसी भी धर्म को नहीं मानते हैं । मुख्य रुप से यहां ४ भाषायें बोली व लिखी जाती है - चायनीज, अंग्रेजी, मलय व तमिल । कुछ लोग हिन्दी भी बोलते हैं । यहां की नागरिकता प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है । उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत सहित अनेक देशों के गुलाम मजदूर अंग्रेजों ने लाये थे । उनकी चौथी पीढ़ी चल रही है । जो अत्यन्त समृद्ध सभ्य व शिक्षित है । यहां की मुद्रा को सिंगापुर डालर कहते हैं; जो भारत के ५०% के बराबर है । समस्त छोटे नोट प्लास्टिक के होने से उनके कटने फटने गलने की समस्या नहीं है । पूरे देश में २१ जिले है, जिससे ८० सांसद निर्वाचित होते हैं । अल्पसंख्यकों के कल्याण व स्वपार्टी का शासन दीर्घकाल तक बना रहे इससे पूरे देश को कुछ निश्चित भागों में बांट कर एक साथ ३-४-५ व कहीं २ व १ भी सांसद खड़े किये जाते हैं और एक पार्टी को मिले गये संबंधित क्षेत्र के कुल बोटों के आधार पर सभी को चुना गया माना जाता है, चाहे उनमें कोई हारा भी क्यों न हो । पूरे देश में हर राजमार्ग पर गगनचुंबी इमारतों व हरियाली को सर्वत्र देख सकते हैं । एक भी गांव नहीं है ।

८०% निवासी मांसाहारी है । ११ लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं । दंगा, चोरी, मिलावट, बलात्कार, रिश्वत लेना-देना, यातायात उल्लंघन, ड्रग्स आदि किसी भी अपराध में कोड़ो से मारना, अत्यधिक आर्थिक दण्ड देश निकाला से लेकर अनिवार्य मृत्यु का प्रावधान होन से किसी की अपराध करने की हिम्मत नहीं पड़ती है । पूरे देश में सभी जगह कैमरे लगे हुए हैं । संसार के सबसे कम भ्रष्ट देशों में इसे एक माना गया है । देश में आठ हवाई अड्डा है । दुनिया के सबसे ज्यादा व्यस्त बंदरगाहों में एक सिंगापुर का है, क्योकि समुद्री व्यापार

बहुत बड़े पैमाने पर है। गर्मी व बरसात होती है ठंड नहीं पड़ती है। नौ हजार कंपनियों में लाखों युवक-युवतियां भारत सहित कई देशों से आकर सेवारत है। पाश्चात्य कंपनियों के समय आधार पर रात ११, १२ व १ बजे तक काम करना पड़ता है। जिससे जीवन यंत्रवत हो गया है। अनेक लोगों के घर में काम के लिये जिन सेविकाओं को रखा जाता है, उन्हें २५००० रु. वेतन दिया जाता है। खुलापन बहुतायत है। ६०-७० प्रतिशत युवक युवतियां, देवियां, हाफ पेंट पहनते हैं। हर युवक को सैनिक शिक्षा अनिवार्य है। महंगाई बहुत ज्यादा है। ७० चर्च, ६३ मस्जिदें, ६ गुरुद्वारा, १ जैन मंदिर, २३ हिन्दू मंदिर व एक आर्यसमाज है। १९२७ में आर्यसमाज की स्थापना हुई। बाद में डी.ए.व्ही., वैदिक हिन्दी स्कूल की प्रमुखता बन आई। डी.ए.व्ही. की तरफ से १२० शिक्षिकायें पूरे देश में हिन्दी पढ़ाती है। भारत में जिस हिन्दी को नई पीढ़ी उपेक्षा करती है, यहां माता-पिता को हजारों रुपये उसके ही अध्यापन हेतु व्यय करने पड़ते हैं। अपने प्रवास में लक्ष्मी नारायण मंदिर, आर्यसमाज व इस्कान विचारधारा के बांग्लादेशी हिन्दुओं में हमें प्रवचन का भी अवसर प्राप्त हुआ। दो श्रद्धालु परिवारों में उपदेश के अतिरिक्त कुछ हिन्दी न जानने वाले तमिल महानुभावों से भी विस्तार से हमने सिद्धान्त विषयक चर्चा की। व्याख्यानों में वेदों के अवतरण, विषय वस्तु, आर्यों का पराभव, उत्कर्ष, १६ संस्कार, ईश्वर का स्वरुप, राष्ट्र परिवार व पंच महायज्ञों पर प्रकाश डाला। दर्शनों के सूत्र व वेदों के मंत्रों को प्रमाण रुप में रखा। ईश्वर कृपा से सकारात्मक प्रभाव रहा। आर्यसमाज के अधिकारियों को वेदप्रचारार्थ कुछ सुझाव दिये। जन सामान्य में साहित्य वितरित किया।

दर्शनों स्थलों में १६५ मीटर ऊंचा झूला, बर्ड पार्क में ५०० पक्षी-पक्षियों द्वारा आज्ञा पालन, जू में सैकड़ों जानवर, सेन्टोसा आइसलैंड का आश्चर्यजनक संसार, सिंगापुर का इतिहास, चीनी देवताओं के मंदिर, यूनिवर्सल स्टुडियो, रिवर सफारी, वाटर वर्ल्ड, हालीवुड ड्रीम पराडे आदि प्रमुख है।

सफल होते हो या असफल,
है ईश्वर के आधीन, इस बात से क्यों डरते हो।
प्रभु तो देखते हैं तुम काम को कितना,
कब, कहां, कैसे और किस नीयत से करते हो ॥

आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी

"वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन"

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द जिले के **आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी परिसर** में प्रान्तीय स्तर का वृहद् **वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन** का आयोजन **दि. ५, ६, ७ दिसम्बर २०१४** को आयोजित किया जा रहा है। जिसमें भारत वर्ष के कोने-कोने से सौ से अधिक वैदिक विद्वानों का आगमन हो रहा है। सम्मेलन में वेद के सुक्ष्मतम् विषयों पर चिन्तन, चंर्चा व संगोष्ठी होगी साथ ही सस्वर वैदिक पाठों से वातावरण सुवाषित होगा। भारतवर्ष के उच्चकोटि के साधु-संन्यासी, विद्वान्, आचार्य सहित समाजसेवी महानुभाव व महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं मंत्रीगण के पधारने की सम्भावना है।

अतः अभी से आप सभी को आयोजन का पावन निमन्त्रण भेज रहे हैं। आयोजन की भव्यता व महत्ता को सार्वजनिन करते हुए अनुरोध है कि इन तिथियों में किसी प्रकार का आयोजन अपने यहां न रखें। सम्मेलन में पधारकर अनुगृहीत करें।

भवदीय : कोमल कुमार आर्य, 'आचार्य' आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम, कोसरंगी,
पो. पचेड़ा, जिला-महासमुन्द (मो. ९६१७०८२०००)

आरोग्य होमियोपैथी से वायरल का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

इबोला वायरस- यह वर्तमान में एक गंभीर बीमारी का रुप धारण कर चुका है। इस बीमारी में शरीर में नसों से खून बाहर आना शुरु हो जाता है, जिससे अंदरुनी ब्लीडिंग प्रारंभ हो जाती है। यह एक अत्यंत घातक रोग है। इसमें ९०% रोगियों की मृत्यु हो जाती है।

शुरुआत इस रोग की पहचान सर्वप्रथम सन् १९७६ में इबोला नदी के पास स्थित एक गाँव में की गई थी। इसी कारण इसका नाम इबोला पड़ा।

रोग फैलने के कारण : यह रोग पसीने और लार से फैलता है। संक्रमित खून और मल के सीधे संपर्क में आने से भी यह रोग फैलता है। इसके अतिरिक्त यौन संबंध और इबोला से संक्रमित शप को ठीक तरह से व्यवस्थित न करने से भी यह रोग हो सकता है। यह संक्रामक रोग है।

लक्षण :- इसके लक्षण हैं उल्टी-दस्त, बुखार, सिरदर्द, ब्लीडिंग, आंखे लाल होना और गले में कफ। अक्सर इसके लक्षण प्रकट होने में तीन सप्ताह तक का समय लग जाता है।

रोग में शरीर को क्षति - इस रोग में रोगी की त्वचा गलने लगती है। यहां तक कि हाथ-पैर से लेकर पूरा शरीर गल जाता है। ऐसे रोगी से दूर रह कर ही इस रोग से बचा जा सकता है।

उपचार :- इस बीमारी का इलाज होमियोपैती में उपलब्ध है- एक दवाई crotalus horrida..जो crotalus नाम के सर्प के विष से बनाई जाती है, इसके सारे लक्षण इबोला वायरस से उत्पन्न लक्षणों से मिलते हैं।

इसके उपरांत जब मैटेरिया मेडिका से इस दवाई-लक्षणों को पढ़ा तो वहां इबोला का नाम साफ दिया हुआ है। यानि जो बीमारी आज विश्व को भयभीतकर रही है, उसका इलाज होमियोपैथी में १०० साल पहले लिखा जा चुका है। अगर आपकी जानकारी में कोई मरीज आये तो कृपया इस दवाई का नाम जरुर बतायें।

चिकित्सक की सलाह से ही होमियोपैथिक दवा उपयोग करना चाहिए।

पता - त्रिवेदी होमियो औषधालय, तलमले काम्पलेक्स, भारतमाता स्कूल के सामने, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

मां भारती उच्च.माध्य. विद्यालय टाटीबंध रायपुर में आयोजित राष्ट्र निर्माण शिविर के अवसर पर अपने विचार रखते हुए हुए ब्र. प्रभात आर्य एवं साथ में डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

समाचार प्रवाह आर्यसमाज सेक्टर-६ का वेद प्रचार अभियान का प्रथम चरण सम्पन्न

भिलाई। आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई के वेद प्रचार अभियान २०१४ का प्रथम चरण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर संम्पन्न हुआ। इस आठ दिवसीय पर्व का श्रावणी रक्षाबंधन को शुभारंभ वैदिक धर्म के राष्ट्रीय प्रचारक मुरादाबाद (उ.प्र.) से पधारे डॉ. महावीर मुमुक्षु द्वारा हुआ। इस दौरान नगर के विभिन्न इलाकों में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग आयोजित किए गए, जिसमें वर्षा के बावजूद बड़ी संख्या में नर-नारियों ने इसका लाभ उठाया।

इस अवसर पर डॉ. महावीर मुमुक्षु ने अपने प्रवचन में मुख्य रूप से वेद ज्ञान, आर्यसमाज की मान्यताओं पर वर्तमान परिस्थितियों में प्रकाश डालते हुए उन पर आचरण की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि समाज को संगठित करने के लिए आर्य नाम, धार्मिक ग्रन्थ वेद, पूजा के लिए अग्निहोत्र तथा भेदभाव, जात-पात से रहित संस्था आर्यसमाज ही एक मात्र विकल्प है। देश की आजादी, दलितों का उद्धार, नारी शिक्षा जैसे तमाम सामाजिक आन्दोलन का नेतृत्व आर्यसमाज ने किया है। अब देश की आजादी की सुरक्षा, अखण्डता, चरित्रवान नागरिक निर्माण की चुनौती में भी आर्यसमाज अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

इस अवसर पर महिला विद्यालय, नर्सिंग कालेज आदि शिक्षण संस्थाओं में बोलते हुए डॉ. मुमुक्षु जी ने कहा कि वेदों में ब्रह्मचारी और आचार्य शिक्षा के दो बिन्दु हैं, इन दोनों को मिलाने वाली रेखा सदाचार है।

इस अवसर पर पूर्ण विधि विधान से आर्य पुरोहित पं. उद्धव शास्त्री ने सभी स्थानों पर यज्ञ पूर्ण करवाए। कार्यक्रम स्थल पर वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर श्रोताओं को उपलब्ध कराया गया। मंत्री श्री रवि आर्य ने बताया कि वेद प्रचार अभियान २०१४ का २२ दिवसीय द्वितीय चरण २ नवंबर से २३ नवंबर १४ तक मनाया जाएगा। प्रधान श्री अवनी भूषण पुरंग ने कार्यक्रम की सफलता के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

संवाददाता : श्री रवि आर्य, मंत्री आर्यसमाज सेक्टर-६, भिलाई

आर्य समाज कोहका (भिलाई) का निर्वाचन सम्पन्न

कोहका। आर्यसमाज कुरुद रोड कोहका भिलाई का निर्वाचन दिनांक २९-७-२०१४ को गत सत्र ९-१२-१२ के कार्यकाल समाप्ति पश्चात् आर्यसमाज के प्रधान श्री रामनिवास गुप्ता जी के आदेश पर यह सभा आयोजित की गई। इस निर्वाचन कार्यक्रम में निर्वाचन अधिकारी के रुप में श्री हरिलाल यादव की उपस्थिति में नये कार्यकारिणी का गठन सम्पन्न हुआ, जिसमें **प्रधान** - श्री अजय खरे, **उपप्रधान** - श्री रामनिवास गुप्ता, **मंत्री** - श्री ध्रुव कुमार सिन्हा **उपमंत्री** - श्री एम.एल. कटरे, **कोषाध्यक्ष** - श्री बसन्त वर्मा, **पुस्तकाध्यक्ष** - श्री राजेश कुमार यादव, **प्रचार मंत्री** - श्री खेमचन्द नाग, वेदप्रकाश निर्वाचित किये गये। उपरोक्त पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

संवाददाता - मंत्री, आर्यसमाज कोहका भिलाई

सघन साधना शिविर

आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान-पिपासु, समाधि, वैराग्य, तत्त्वज्ञान के अभिलाषी, आत्मकल्याण के इच्छुक, अध्ययन-स्वाध्याय-प्रेमी, भद्रशील महानुभावों। आपके प्रिय **दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट** रोजड़ में योगाभ्यास के पथ पर आरोहण, प्रगति, सकल क्लेश के प्रक्षालन या अन्तःकरण की परिशुद्धि, ऐहिक सुख-शान्ति एवं आत्मा व परमात्मा की प्राप्ति हेतु वैदिक दर्शनों के आधार पर एक वर्ष के लिए स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती जी, आचार्य दर्शन योग महाविद्यालय की अध्यक्षता में सघन साधना शिविर के नाम से एक आध्यात्मिक ज्ञान गंगा की धारा तिथि **१ अक्टूबर २०१४ से ३० सितम्बर २०१५ तक** प्रवाहित होने जा रही है। इस शिविर के लिए विद्यालय के संस्थापक पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज का आशीर्वाद व शुभकामनाएँ भी प्राप्त है।

संपर्क : ०९४०९४१५०११, ०९४०९४१५०१७

केरल में हुआ नई वैदिक क्रांति का उदय

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के अन्तर्गत राष्ट्रसमृद्धि यज्ञ एवं महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र का शिलान्यास सम्पन्न

दिल्ली। आर्यसमाज का अपनी स्थापना से एक ही सबसे बड़ा उद्देश्य रहा है। मानव मात्र को वेद तथा वैदिक संस्कृति का ज्ञान कराना। इसलिए वह देश के प्रत्येक कोने में पहुंचकर लोगों की चेतना को जागृत कर ऋषियों की पावन वैदिक संस्कृति को जोड़ने का सत्कार्य करता रहा है।

इसी पृष्ठभूमि में देवभूमि केरल में लोगों को महर्षि दयानन्द की मान्यताओं से अवगत कराने तथा साम्यवाद और ईसायत के बढ़ते प्रभाव से अपनी स्वयं की संस्कृति को भूलते जा रहे केरल वासियों तक वेदों का दिव्य ज्ञान पहुंचाने के लिए दीर्घकाल से अनेक प्रयास किये जा रहे थे, जिसमें अनेक आर्य विद्वानों का योगदान रहा है - आचार्य नरेन्द्र भूषण जी को इसके लिए हमेशा याद किया जाएगा। उन्हीं से प्रेरणा पाकर आचार्य एम.आर. राजेश जी ने अपने जीवन को वेद की आज्ञाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए समर्पित कर दिया तथा उनके कार्य का ऐसा प्रभाव हुई कि आज केरल में वेद के मन्त्र पुनः घर-घर में उच्चारित होते हैं तथा प्रातः-सायं अग्निहोत्र की अग्नि घर-घर में प्रज्वलित होने लगी। कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए वर्तमान का ५०० गज का भवन भी पर्याप्त नहीं था। अतः अधिक साधन की आवश्यकता है।

उन सभी प्रयासों की परिणति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के तत्वावधान में महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम) के रुप में हुई। जिसका शिलान्यास समारोह १५ अगस्त २०१४ शुक्रवार को कोषिक्कोड (कोझीकोड) केरल में भव्य राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ के साथ हुआ।

वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह में आर्य जगत के ख्याति प्राप्त स्वामी सदानन्द जी (पंजाब), स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली), स्वामी सौम्यानन्द जी (हरयाणा), स्वामी ऋतस्पति जी (होशंगाबाद), महात्मा ब्रह्ममुनि जी, महाशय धर्मपाल जेयरमेन एम.डी.एच., श्री सत्यपाल सिंह जी माननीय संसद सदस्य, विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, धर्मपाल आर्य वरिष्ठ उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, राजीव आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली राज्य, राधाकृष्ण वर्मा, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा जी एवं दिल्ली सभा के उपप्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य सहित देश के कोने-कोने से आर्यजन उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ राष्ट्रीय प्रार्थना के साथ हुआ, जिसमें चारों वेदों के मन्त्रों का पाठ किया गया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वैदिक ओ३म् ध्वज के साथ ही राष्ट्रगान पूर्वक राष्ट्रीय ध्वजारोहण भी किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष आचार्य एम.आर. राजेश जी थे, जिन्होने पिछले दशक से अपना तन, मन एवं धन सब कुछ ऋषि के इस मिशन के पीछे समर्पित कर दिया है। मलयालम में दिये गये उनके स्वागत भाषण की प्रत्येक पंक्ति पर लगातार तालियों की गड़गड़ाहट हो रही थी। उन्होने केरल की ओर दृष्टि करने एवं यहां पधारने के लिए धन्यवाद भी किया।

इस अवसर पर महाशय धर्मपाल आर्य चेयरमेन एम.डी.एच. मसाले के करकमलों से नवसंकल्पित वेदाश्रम भवन का शिलान्यास किया गया। विधिवत वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ संकल्प व्यक्त किया गया कि आगामी १५ अगस्त २०१५ को इस भवन का लोकार्पण समारोह भी इसी प्रकार से भव्य रुप से मनाया जाए।

कोषिक्कोड का यह वेदाश्रम शिलान्यास समारोह कोई साधारण भवन के शिलान्यास की तरह नहीं था। इसमें भावना छिपी थी, संस्कृति के संरक्षण की, वेदों के पुनरुद्धार की, ईसाई, मुस्लिम और कम्युनिष्ट विचारों के जबरदस्त प्रभाव के कारण दबाई, कुचली जा रही भारतीय अस्मिता की रक्षा की और यही कारण था कि विनय आर्य महामंत्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने उद्बोधन में शंकराचार्य की इस जन्मभूमि में मथुरा से निकली देव दयानन्द की ज्योति को घर-घर में पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया। समारोह में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. मसाले वालों ने कहा कि यदि स्वर्ग चाहते हो तो ओ३म् का जाप करो, यज्ञ करो। वेद का यही आदेश है - इस विचार को आचार्य जी घर-घर पहुंचा रहे हैं। जितना महान् ये यज्ञ कर रहे हैं उसमें हम तो एक छोटी सी आहुति देने आए हैं। परमात्मा हम सबको ऐसा आशीर्वाद दे कि हम सब मिलकर यह कार्य पूरी शक्ति से कर सकें।

संसद सदस्य श्री सत्यपाल सिंह ने कहा कि लार्ड मैकाले ने भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का जो कुचक्र रचा उसका निराकरण वैदिक संस्कृति के संरक्षण और व्यापक प्रचार से ही संभव है। आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने ऐसे भव्य आयोजन और शुभ संकल्प के लिए महाशय धर्मपाल जी को आशीर्वाद देते हुए सभी दिशाओं में इस प्रकार के आश्रम खोलने को कहा। कार्यक्रम में स्वामी सौम्यानन्द जी, स्वामी ऋतस्पति, डॉ. ब्रह्ममुनि जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह के अवसर पर आर्यसमाज के सिद्धान्तों को जन जन तक पहुंचाने के लिए आचार्य एम.आर. राजेश जी द्वारा मलयालम भाषा में लिखी गई नौ पुस्तकों का भी विमोचन किया गया। केरल कोझीकोड में आयोजित इस भव्य समारोह में देश के विभिन्न आर्यसमाजों से आर्यजन पहुंचे थे। इस समारोह की सबसे बड़ी विशेषता रही आगन्तुक अतिथियों को अतिथि सत्कार जिसने आने वाले प्रत्येक जन का हृदय जीत लिया। रेल्वे स्टेशन से समारोह स्थल तक ले जाने, ठहरने का जो प्रबंध आयोजन कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन ने किया उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है।

अभूतपूर्व स्वागत

समारोह में पधारे प्रत्येक अतिथि का तुलसी के पत्तों की माला पहनाकर स्वस्तिवाचन के मंत्रों के साथ केरलीय ढोल नगाड़ों की थाप पर आत्मीयता पूर्वक स्वागत किया गया। ऐसा स्वागत लेखक ने इससे पूर्व कभी नहीं देखा। बस से उतरते ही मलयालम की भूमि पर हिन्दी में नमस्ते का श्रवण आन्दातिरेक से हृदय को पूरित कर रहा था।

पेट भरा पर मन नहीं

चूंकि कार्यक्रम केरल में था और मन यह धारणा पूर्व से ही बैठी हुई थी कि दक्षिण में तो रोटी मिलना मुश्किल है, जितने दिन रुकेंगे केवल दाल चावल से काम चलाना होगा। किन्तु जब इस समारोह के अतिथि सत्कार को देखा तो पूर्व की सारी धारणाएँ ध्वस्त हो गई। प्रातःकाल के नाश्त में इडली, बड़ा, मेदुबड़ा, सांभर, नारियल की चटनी, पुलाव ने उत्तर भारतीय भोजन की विस्मृत करा दिया। मध्याह्न में जब केले के पत्तों पर कयापातोरन, कोजीकोड हलवा, पायसा, केला फ्राई, चना मीठा, पूरी, चटनी, भाजी (कैला, गाजर, आलू, मिक्स सब्जी) रोटी, दाल के साथ खाई तो आत्मा तृप्त हो गई। इतने स्वादिष्ट भोजन के उपरान्त तो मुझसे रहा नहीं गया और आचार्य राजेश आर्य जी को कह दिया कि आचार्य जी पेट भरा है पर मन नहीं।

एक कांतदर्शी व्यक्तित्व आचार्य राजेश जी

केरल में वेदाश्रम की स्थापना का यह समारोह जितना भव्य और दिव्य रहा उतना ही भव्य और दिव्य है इसके पीछे अहर्निश कार्य करने वाले एक क्रान्तदर्शी व्यक्तित्व, जिनका नाम है आचार्य राजेश। कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक आचार्य राजेश जी विगत एक दशक पूर्व केरल आये तो देखा कि केरल में वेद का मतलब बाइबिल है वैदिक शब्द का अर्थ पादरी है। बस यहीं से भीष्म प्रतिज्ञा कर संकल्प लिया कि केरल की नई पीढ़ी वेद को वेद कहेगी, वैदिक को वैदिक कहेगी, पादरी और बाईबिल नहीं और लग गये महर्षि दयानन्द की मान्यता के अनुरुप वेद प्रचार के कार्य में।

आर्य शिरोमणि महादानी महाशय धर्मपाल दो करोड़ रुपये दान देने का निर्णय दो सैकण्ड में

महाशय धर्मपाल जी गत फरवरी मास में भाग लेने गए। वहां वेदाश्रम के लिए भूमि दिखाई गई तो उन्होंने तुरन्त कहा खरीद लो एवं पूछा कितने की है। उन्हें जानकारी दी गई कि दो करोड़ रुपये की। महाशय जी ने कहा ठीक है इस निर्णय में महाशय जी ने दो सैकण्ड का भी समय नहीं लिया।

क्रमशः पृष्ठ ३४ पर

महाशय जी वेदाश्रम के लिए पूर्ण व्यय कर सकते हैं। लेकिन आर्यजनों को प्रेरित करने के लिए एक करोड़ ग्यारह लाख एक हजार ग्यारह रुपये (१,११,११,१११) दान दने की घोषणा विशाल मंच से की।

ऋषि मिशन को विश्व में फैलाने का क्रान्तिकारी युवा – श्री विनय आर्य

मंच पर उपस्थित सभी वक्ताओं ने श्री विनय आर्य के कार्य की प्रशंसा की एवं उन्हें अपना आशीर्वाद दिया। सभी उपस्थित आर्यजनों ने सफल आयोजन के लिए बधाई दी। मंच पर उपस्थित महाशय धर्मपाल जी ने खड़े होकर श्री विनय आर्य के कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया।

राष्ट्र स्मृद्धि महायज्ञ

कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन तथा दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह का सर्वप्रमुख आकर्षण का कोई केन्द्र रहा तो वह था राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ। शिलान्यास समारोह होते हुए भी इसने वैदिक कालीन यज्ञ सत्रों का स्मरण करा दिया।

इस महायज्ञ के अवसर पर २००८ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के पूर्व गुरुवंदन सूक्त, भाग्य सूक्त तथा संगठन सूक्त का पाठ किया गया, पश्चात् वैदिक संध्या के साथ यज्ञ प्रारंभ हुआ। यज्ञ में प्रत्येक यजमान के लिए पृथक-पृथक तांबे के यज्ञ कुण्ड थे। सभी के लिए छोटा दीपक, बड़ा दीपक, समिधा, सामग्री, घी, यज्ञपात्र थे जो स्वयं यजमान लेकर आये थे। यज्ञ के प्रति यह उनकी अगाध श्रद्धा का परिचायक है।

यज्ञ समापन के उपरान्त मलयालम भाषा में यज्ञ प्रार्थना एवं विश्व कल्याण की कामना की गई। इस यज्ञ की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें बच्चे एवं बुजुर्गों के अतिरिक्त ८० प्रतिशत युवा दम्पत्तियों ने आहुतियाँ दी। यज्ञ के अंत में होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से भजन गाकर यज्ञ के भौतिक एवं आध्यात्मिक महत्व को बतलाया गया। लगभग ५०० नर-नारियों ने इस महान यज्ञ में भाग लिया तथा सबके लिए भोजन व्यवस्था की गई।

संवाददाता : विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अरविन्द पाण्डेय, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नैष्ठिक दीक्षा लेकर दो नवयुवकों ने किया आजीवन समाज सेवा का संकल्प

आमसेना। आज पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर भारतवर्ष भी अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, भाषा, संस्कार तथा आदर्श को भूलता जा रहा है। आज के नवयुवक-नवयुवतियाँ भी इसी रंग में रंगकर भेड़चाल में चलते जा रहा है। इसी दुर्दशा को देखते हुए पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने हरयाणा प्रान्त से आकर ओड़िशा प्रान्त के एक अकालग्रस्त कालाहाण्डी (वर्तमान नुआपाड़ा) जिले में गुरुकुल आश्रम आमसेना नामक वृहद संस्था की स्थापना की। आज इस गुरुकुल से अन्य १८ संस्थाएं संचालित हैं।

स्वामी जी ने अपने प्रभाव से अनेक नवयुवकों को नैष्ठिक दीक्षा देकर देश, धर्म की रक्षा का संकल्प करवाया है तथा सभी नवयुवक स्वामी जी के निर्देशानुसार कार्य कर रहे हैं। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए गत १० अगस्त को ब्र. राकेश कुमार तथा ब्र. प्रवीण आर्य (पुनीराम) ने श्रावण पूर्णिमा (रक्षाबंधन) के दिन आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना सर्वस्व देश को सौंप दिया। इस गरिमामय कार्यक्रम में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी व्रतानन्द जी, डॉ. कुञ्जदेव मनीषी एवं बहुत से विद्वान एवं अतिथिगण उपस्थित थे। अन्त में स्वामी धर्मानन्द जी ने दोनों ब्रह्मचारियों के इस ऐतिहासिक कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

संवाददाता : आचार्य रणजीत विवित्सु, मुख्याध्यापक, गुरुकुल आश्रम आमसेना

शिक्षा

जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटे, उसको शिक्षा कहते हैं।

डी.ए.वी. इस्पात स्कूल नन्दिनी में संस्कृत सप्ताह सोल्लास सम्पन्न

संस्कृत में विश्व भाषा का दर्जा रखने की क्षमता है। संस्कृत की तूती पूरी दुनियां में बोल रही है। जर्मनी, अमेरिका, ब्रिटेन, इंडोनेशिया हर जगह संस्कृत के प्रति रुझान बढ़ रहा है। आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी में अनिवार्य रुप से संस्कृत विभाग स्थापित है। उक्त उद्गार संस्कृत के ख्यातिलब्ध विद्वान डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने डी.ए.व्ही. नन्दिनी में संस्कृत सप्ताह के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि व मुख्य निर्णायक की आसंदी से बोलते हुए व्यक्त किये।

नन्दिनी (भिलाई)। डी.ए.व्ही. इस्पात स्कूल नन्दिनी में बीता सप्ताह संस्कृतमय रहा। शाला में ७ अगस्त से १३ अगस्त १४ तक का वातावरण पूरी तरह संस्कृत व संस्कृतिमय बना रहा। केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड भारत सरकार के निर्देशानुसार देशभर में आयोजित संस्कृत सप्ताह के तहत डी.ए.व्ही. इस्पात स्कूल नन्दिनी में प्रार्थना सभा में प्रतिज्ञा, समाचार, सुविचार, सुभाषितम्, सामान्य ज्ञान, विज्ञान प्रश्नोत्तरम्, बच्चों के भाषण एवं सभी प्रार्थनाएँ संस्कृत में सम्पन्न हुई।

संस्कृत सप्ताह के अंतिम दिन १३ अगस्त को आयोजित समारोह में शाला का वातावरण पूरी तरह संस्कृतमय बन गया, जब इस समारोह में बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं व सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भाग लेते हुए सस्वर श्लोकपाठ, संस्कृत गीत व संस्कृत भाषण आदि के द्वारा संस्कृत की महत्ता दर्शायी।

समापन समारोह में प्रतियोगिता के निर्णायक अतिथि के रुप में संस्कृतविद् आचार्य डॉ. महेशचंद्र शर्मा व डी.पी.एस. रिसाली के पूर्व उपप्राचार्य डॉ. राजकुमार शास्त्री उपस्थित थे। इस अवसर पर बोलते हुए आचार्य शर्मा ने कहा कि संस्कृत विश्व भर में आदृत भाषा है। इसमें विश्व भाषा बनने की पूरी क्षमता है। वहीं दूसरे निर्णायक डॉ. राजकुमार शास्त्री ने कहा कि संस्कृत भारत की आत्मा है। कार्यक्रम में शाला के प्राचार्य श्री आर.एस. पालीवाल भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन शाला के संस्कृत शिक्षक कर्मवीर शास्त्री एवं शिक्षिका सुषमा ने किया।

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें ७वीं व ८वीं के छात्रों की श्लोकान्ताक्षरी, ८वीं एवं १०वीं के बच्चों के बीच क्वीज प्रतियोगिता, ६वीं से ८वीं तक के बच्चों के लिए श्लोक उच्चारण प्रतियोगिताएं हुई। प्रतियोगिता के विजयी विद्यार्थियों को अतिथियों के हाथों पुरस्कृत किया गया।

इस कार्यक्रम में संस्कृत भाषा पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी हुई। इसमें ९वीं व १०वीं के छात्रों ने लघु नाटिका **"संस्कृतस्य लोकभाषात्वं"** का प्रदर्शन किया, जिसमें राजा भोजकालीन संस्कृत की गौरवमयी स्थिति का प्रदर्शन किया गया। कक्षा ७वीं की छात्राओं ने अभिनयगीत पर नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों को भावविभोर कर दिया। कक्षा ८वीं के छात्रों ने गीत के माध्यम से संस्कृत की महिमा का वर्णन किया। कक्षा १०वीं के छात्रों ने संस्कृत में देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर प्रशंसा बटोरी। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

संवाददाता : कार्यालय, डी.ए.व्ही. नन्दिनी

दो दिवसीय राष्ट्र निर्माण शिविर सम्पन्न

रायपुर। विगत दि. ११व १२-८-१४ को शासकीय उच्च.माध्य. शाला सरोना (रायपुर) एवं माँ भारती माध्य. शाला टाटीबंध रायपुर में दिनांक २२ व २३ सितंबर २०१४ को छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में एक राष्ट्र निर्माण शिविर का बालक-बालिकाओं को लक्ष्यकर आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य था वर्तमान काल में बढ़ती जा रही युवा पीढ़ी की भटकाव को नियंत्रित कर उसे सही दिशा याने राष्ट्र के नवनिर्माण में उत्तरदायित्व निभाने की प्रेरणा देना। इस इसविर में भारी संख्या में छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। दोनों दिन के सत्रों को ब्र. प्रभात आर्य ने सम्बोधित किया। प्राचार्य जी ने अपने उद्गार में इस प्रकार के शिविरों की निरन्तरता पर जोर डाला। उत्साहपूर्ण वातावरण में शिविर सम्पन्न हुआ। *निज. प्रति.*

भद्रक (उड़ीसा) में यज्ञ एवं वेदप्रचार

भद्रक (उड़ीसा) । आचार्य पं. श्री वासेदुव व्रती जी द्वारा दि. १० जून से १३ जून २०१४ तक भद्रक (उड़ीसा) में भव्य समारोह के साथ यज्ञ एवं वैदिक प्रवचन का कार्यक्रम सफल रहा । इस कार्यक्रम के समस्त व्यय भार एवं प्रबन्ध श्रीमान् अशोक साहू जी ने वहन किया था । यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री वीरेन्द्र पण्डा जी थे, तो उत्कल के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान हैं। वैदिक प्रवचन में वेद दर्शन, उपनिषद के आधार से वैदिक प्रवचन वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री वासुदेव व्रती जी द्वारा आकर्षक, रहस्य उद्घाटन पूर्वक अनुसन्धानात्मक प्रवचन हुए । मध्य में श्री अशोक साहू जी के विस्तीर्ण उद्यान जहां फूल, फल, जलाशय, गोशाला है, सघन फलदार वृक्ष है, उस मनोरम उद्यान में यज्ञ, सात्विक वातावरण में सम्पन्न हुआ। दि. १३ जून १४ को श्री अरविन्द पूर्णांग शिक्षा व गवेषणा केन्द्र दिव्यभूमि भद्रक में जहां विद्यालय भी चल रहा है आश्रम का परिदर्शन किया गया। इस आश्रम में विद्यालय, पुष्पोद्यान, औषधि रोपण, योग साधना, वृहद् ग्रन्थालय, मध्य में जलपूर्ण पुष्करिणी के मध्य ध्यानपीठ, चारों तरफ से पुव की व्यवस्था, मृग मोर आदि वन्य पशुपालन, पुष्करिणी में मत्स्य पालन एवं दर्शन । उद्यान में दुर्लभ प्रजातियों के फूलों की भव्य शोभा । दुर्लभ प्रजातियों के औषधियों का रोपण दर्शनीय है ।

संवाददाता : श्री वीरेन्द्र पण्डा, वैदिक विद्वान, भद्रक

विमोचन एवं पुस्तकों का वितरण कार्यक्रम सम्पन्न

दिल्ली । मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित **पाणिनीय अष्टाध्यायी प्रवचनम् का विमोचन एवं बैग व पाठ्यपुस्तकों का वितरण** दिनांक ६ जुलाई २०१४ को १९९, गुरुकुल गौतम नगर, में उत्साह एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

पाणिनीय अष्टाध्यायी प्रवचनम् पुस्तक का विमोचन, कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी, मुख्य अतिथि डॉ. सुधीर कुमार आर्य (जे.एन.यू.) विशिष्ट अतिथि पण्डित जगदीश दातादीन एवं मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियों के साथ अन्य आमंत्रित विद्वान् डॉ. अजय कुमार (जे.एन.यू.), डॉ. विवेकानन्द शास्त्री (रोहतक), श्री रामचन्द्र अहलावत (योग शिक्षक दिल्ली) आदि के कर-कमलों द्वारा किया गया । तत्पश्चात् गुरुकुल गौतमनगर, गुरुकुल मंझावली, गुरुकुल पौंधा (देहरादून), नवउद्घाटित गुरुकुल केरल के ४० ब्रह्मचारियों को साठ हजार रुपये मूल्य के बैग एवं पाठ्यपुस्तकें वितरित की गई।

इस अवसर पर पाणिनीय अष्टाध्यायी प्रवचनम् के भाष्यकार स्व. आचार्य सुदर्शनदेव जी के सुपुत्र डॉ. सुधीर कुमार आर्य (जे.एन.यू.) ने अपने उद्बोधन में सभी ब्रह्मचारियों को अधिक से अधिक संस्कृत व्याकरण के ज्ञान को प्राप्त कर जीवन में सफल होने का उपदेश दिया। हालैण्ड से पधारे पंडित जगदीश दातादीन ने कार्यक्रम की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए रामपाल शास्त्री व मानव सेवा प्रतिष्ठान के सभी अधिकारियों की प्रशंसा की। डॉ. कंवरसिंह (प्रवक्ता, वैंक्टेश्वर कालेज), डॉ. अजय कुमार (योग शिक्षक जे.एन.यू.), श्री चन्द्रदेव शास्त्री (संस्कृत शिक्षक सोनीपत), श्री रामपाल शास्त्री (मानव सेवा प्रतिष्ठान), श्री के.एम. राजन (गुरुकुल केरल), श्री विजय कुमार आर्य (मानव उत्थान संकल्प संस्थान) श्री रामचन्द्र अहलावत (योग शिक्षक दिल्ली) आदि ने अपने उद्बोधन एवं उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया।

अध्यक्षीय भाषण में स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यों की सराहना करते हुए स्व. आचार्य श्री सुदर्शन देव जी के साथ अपने संस्मरण सुनाये तथा सभी छात्रों को पाठ्यपुस्तकें प्रदान करते हुए उन्हें जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति पथ पर अग्रसर रहने की प्रेरणा दी।

संवाददाता : सोमदेव शास्त्री,
प्रधान, मानव सेवा प्रतिष्ठान)

❀ भावभीनी श्रद्धांजलि ❀

श्री रविन्द्र कुमार प्रधान

सुकुलभटली (रायगढ़)। आर्यसमाज सुकुलभटली के विशिष्ट कार्यकर्ता श्री रविन्द्र कुमार प्रधान ३५ वर्ष की उम्र में उनका आकस्मिक निधन दिनांक ८ अगस्त २०१४ हो गया। उनका अन्त्येष्टि कार्यक्रम वैदिक विधान से उनके गृहग्राम में ही किया गया। वे अपने पीछे पत्नी, एक पुत्र व एक पुत्री सहित अपना भरापूरा परिवार छोड़ गये। उनके अन्त्येष्टि कार्यक्रम में आर्यसमाज सुकुलभटली के प्रधान श्री शंभुनाथ प्रधान, मंत्री श्री पुनीराम आर्य एवं कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर प्रधान सहित लगभग ३०० ग्रामीणजन उपस्थित रहे। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य एवं अग्निदूत परिवार अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

संवाददाता : कृष्णचन्द्र प्रधान, प्रतिनिधि आर्यसमाज, सुकुलभटली

श्री जनकराज तलवार

दुर्ग। आर्यसमाज मठपारा के प्रधान श्री जनकराज तलवार जी का विगत १६ अगस्त २०१४ को ७५ वर्ष की आयु में अप्रत्याशित देहावसान हो गया। आप बहुत उत्साही कार्यकर्ता थे। आर्यसमाज के बड़े सम्मेलनों, कार्यक्रमों आदि में अवश्य भाग लेते थे। आप एक भावनाशील कवि भी थे। आपकी असंख्यक कविताएँ अग्निदूत में प्रकाशित होती रही है। कविताओं में स्वामी दयानन्द सम्बन्धी विचार बड़े ही भावुकता भरे होते थे। उनके असामयिक निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। शांति यज्ञ दिनांक १९-९-२०१४ को सम्पन्न हुआ, जिसमें सभा के उपमंत्री श्री रवि आर्य, कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य जी उपस्थित रहे। दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए अग्निदूत परिवार प्रभु से प्रार्थना करता है।

श्रीमती रेमी वर्मा

रायपुर। विगत १४-८-२०१४ को राजधानी रायपुर स्थित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के प्रधान श्री दयाराम वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती रेमी वर्मा का हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम रविवार दि. २४-८-२०१४ को उनके निवास स्थान न्यू सागर विहार डूंडा रायपुर में सम्पन्न हुआ, जिसमें सभा पदाधिकारी, मंत्री, कार्यालय मंत्री, उपप्रधान, उपमंत्री व कोषाध्यक्ष आदि सहित लगभग ५०० लोगों की उपस्थिति रही। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई। माताजी बहुत ही सेवाभावी एवं धर्मपारायणा थी। घर में आए साधु सन्त महात्माओं की बहुत आवभगत करती थी। उनके असामयिक निधन से पूरा परिवार शोकाकुल है। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों एवं अग्निदूत परिवार इस दुख की घड़ी में शोक संतप्त परिवार को सान्त्वना प्रदान करने के साथ-साथ दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

- संवाददाता - दीनानाथ वर्मा, सभा मंत्री

श्री बालकिशन लूथरा

आर्यसमाज मठपारा के वरिष्ठ सदस्य श्री बालकिशन लूथरा जी का गत् दि. २१-८-२०१४ को हृदयगति के अवरोध से देहावसान हो गया। आपकी आयु ७० वर्ष के लगभग थी। आप बहुत सहयोगी स्वभाव के थे। आपके अचानक चले जाने से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। अग्निदूत परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करता है। ***संवाददाता : निज प्रतिनिधि***

शिक्षक है राष्ट्र के निर्माता

कोटा । बालकों में सुसंस्कार परिवार से प्रारंभ होते हैं। बड़ा होने पर उन्हीं संस्कारों के आधार पर अपने परिवार, अपने समाज, अपने कार्यक्षेत्र में व्यक्ति प्रतिष्ठा पाता है। मेरे गांव में कोई भी व्यक्ति धूम्रपान नहीं करता, ना ही शराब का सेवन करता है । इसका कारण है कि पांचवी कक्षा से ही बालक को परिवार में गीता, रामायण व धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन अनिवार्य रुप से करते हैं। उक्त विचार जिला शिक्षा अधिकारी तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गंगाधर मीणा ने राजकीय बालिका उच्च. माध्य. विद्यालय तलवंडी में वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते हुए व्यक्त किए। कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्यसमाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र के निर्माता हैं, जो विद्यार्थियों को उसकी रुचि एवं योग्यता के अनुसार संस्कारित करके श्रेष्ठता की ओर ले जाता है, जिससे देश के लिए शिक्षित संस्कारित और होनहार नागरिक बनकर राष्ट्र निर्माण में वह अपनी अहम भूमिका निभाता है। समिति के मंत्री प्रभुसिंह कुशवाह ने सभी उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए विद्यालय प्रशासन से भी अपने वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित करने हेतु धन्यवाद दिया।

संवाददाता : अरविंद पाण्डेय, अध्यक्ष वेदप्रचार समिति कोटा

वेद ज्ञान के माध्यम से डालें बच्चों में संस्कार

कोटा । घर-घर पहुंचे वेद का ज्ञान जिसके माध्यम से बच्चे संस्कारित होकर करें विश्व कल्याण के कार्य । वेदों में हीं है सृष्टि का सारा ज्ञान । वेदों का पुनः वेदभाष्य करके महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ओर लौटो का संदेश दिया । उक्त विचार वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत बालिका उच्च. माध्य. विद्यालय वल्लभनगर, गुमानपुरा में आयोजित कार्यक्रकम के मुख्य अतिथि श्रीमती सरिता रंजन गौतम, प्राचार्य डी.ए.व्ही. पब्लिक स्कूल तलवंडी कोटा ने व्यक्त किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्यसमाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि सकारात्मक सोच से प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है, जो मनुष्य जीवन में सकारात्मक विचारों को अपनाकर व्यवहार करता है वह प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता जाता है । शाला की प्रधानाचार्य श्रीमती साधना अग्रवाल ने स्कूल की लाईब्रेरी के लिए वैदिक साहित्य व अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया।

कार्यक्रम में आर्य विद्वान पं. शोभाराम आर्य व रामप्रसाद याज्ञिक ने भी छात्राओं को सम्बोधित किया। समिति के मंत्री श्री प्रभु कुशवाह ने सभी अतिथियों, विद्यालय परिवार का आभार व्यक्त किया।

संवाददाता : अरविंद पाण्डेय, अध्यक्ष वेदप्रचार समिति कोटा

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८, **श्रीनारायण कौशिक** : ९७७०३६८६१३

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

"संस्कृत सप्ताह" डी.ए.व्ही. नन्दिनी की चित्रमयी झलकियाँ

सितम्बर 2014

CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,

श्रीमान्

प्रेषक :

अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

वार्षिक साधारण सभा बैठक की सूचना

सभा नियमावली धारा 25 और अन्तरंग बैठक दिनांक 22-6-2014 के निर्णयानुसार छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की वार्षिक साधारण सभा की बैठक दिनांक 21-09-2014 (रविवार) प्रात: 11.00 बजे से तुलाराम आर्य कन्या उ.मा. विद्यालय, आर्यनगर दुर्ग (छ.ग.) के सभागार में आयोजित की गई है। अत: सभी सम्मानित मान्य प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वार्षिक साधारण सभा की बैठक में, निर्धारित समय पर, अनिवार्य रुप से उपस्थित होकर महत्वपूर्ण विचारणीय विषयों पर निर्णय लेने में सभा को सहयोग प्रदान करेंगे।

बैठक की सूचना क्रमांक 07/अगस्त/वर्ष 2014, दिनांक 30-8-2014 द्वारा विचारणीय विषय की सूची, सभी मान्य प्रतिनिधियो को पंजीकृत डाक द्वारा भेजी जा चुकी है। जिसे किसी कारणवश सूचना नहीं मिल पाई हो, वे कृपया इसी को सूचना मानकर निर्धारित स्थान व समय पर उपस्थित होकर बैठक में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे।

प्रत्येक आर्यसमाज के प्रतिनिधि अपने आर्यसमाज के समस्त रिकार्ड (जैसे – साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति रजिस्टर, सदस्यता पंजी, साधारण/अंतरंग बैठक कार्यवाही रजिस्टर, कैश बुक आदि) सहित उपस्थित होने का कष्ट करेंगे।

वार्षिक साधारण सभा बैठक में पहुंचने वाले प्रत्येक प्रतिनिधिगण अपने आने की सूचना दिनांक 15-9- 2014 तक अनिवार्य रुप से कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य को मो. नं. 9630801257 पर सूचित करने का कष्ट करेंगे, ताकि आने-जाने, भोजन एवं आवास की व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके।

दीनानाथ वर्मा
मंत्री
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
मोबा. नं. 9826363578

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.